वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 523

शाश्वत तीर्थ अयोध्या
स्तुति संग्रह

–रचयित्री–
भारतगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

आदिब्रह्मा, युगप्रवर्तक, पुरुदेव, आदिनाथ, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के मोक्षकल्याणक-माघ कृ. चतुर्दशी, वी. नि. सं. 2547 (10 फरवरी 2021) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2547	मूल्य
1100 प्रतियाँ	माघ कृ. 14, 10 फरवरी 2021	40/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादकः-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

भगवान महावीर के शासनकाल में जैन समाज में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ऐसी साध्वी हैं, जिन्होंने जैन समाज में एक स्वर्णिम इतिहास रच दिया है। लगभग 500 ग्रंथों की रचना, 24 तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों का विकास, जैन भूगोल-जम्बूद्वीप रचना, तेरहद्वीप रचना, तीनलोक की रचना का शास्त्रोक्त निर्माण एक अद्भुत कार्य है। मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में ऋषभगिरि पर 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण जैनधर्म की ध्वजा को आकाश की ऊँचाईयों तक पहुँचाने का एक ऐतिहासिक कार्य है।

पूज्य माताजी का हम सभी पर परम उपकार है, जो कि हमें नित्य नई-नई बातों से, प्राचीन रहस्यों से अवगत कराती हैं। इनके जीवन का हर पल नई-नई कृतियों को, नई-नई रचनाओं को लिए रहता है। जिनकी लेखनी में, वाणी में सरस्वती का वास है, तभी तो षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ की 16 पुस्तकों पर संस्कृत टीका लिखकर जैन समाज को एक महान कृति प्रदान की है। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया है। आज सारे विश्व में जिनके द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र आदि विधानों की धूम मची है। जिन्हें चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान है।

पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास हुआ है। उस तीर्थ के प्रति पूज्य माताजी का एक विशेष लगाव रहा है। अयोध्या में जन्में तीर्थंकरों के बारे में एवं अयोध्या से जुड़े इतिहास के बारे में पूज्य माताजी ने **'शाश्वत तीर्थ अयोध्या स्तुति संग्रह'** के माध्यम से जानकारी प्रदान की है। इस पुस्तक में लिखी स्तुतियों को पढ़कर आप परोक्ष में भी अयोध्या तीर्थ की, भगवन्तों की, गुरुओं की वंदना कर महान पुण्य का संचय करें और एक दिन अयोध्या जाकर साक्षात् तीर्थ का दर्शन-वंदन करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित यह पुण्य आप सभी के जीवन में खूब पुण्य का वर्धन करें और आप सभी एक दिन अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने में सफल हों, यह मंगल कामना है।

पूज्य माताजी दीर्घायु हों और अन्य जीवों को मोक्षमार्ग में लगाती रहें, यही मंगल भावना है।

आद्य वक्तव्य

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

मंगलाचरण

श्री गौतमस्वामि कृत

''णमो णिसीहियाए 3।।''

निषीधिकाओं को नमस्कार होवे, नमस्कार होवे, नमस्कार होवे।

टीकाकार श्री प्रभाचंद्राचार्य ने 'निषीधिका' के 17 अर्थ किये हैं। उनमें से अधिकतम अर्थों के अनुसार यह शाश्वत तीर्थ अयोध्या गर्भित हो जाती है। पुनश्च वर्तमान में यहाँ पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि के स्थान टोंक नाम से प्रसिद्ध हैं। आज प्रत्येक टोंक पर मंदिर बन गये हैं। पहले यहाँ प्रत्येक टोंक पर चरण विराजमान थे, वे चरण जहाँ की तहाँ विराजमान हैं। एक टोंक पर श्री भरत एवं बाहुबली की प्रतिमाएं विराजमान हैं एवं इन्हीं दोनों के चरण भी विराजमान हैं। हस्तिनापुर में इन तीर्थंकरों की जन्मभूमि के स्थान को 'नशिया' कहते हैं। कहीं-कहीं शहर-गांव के बाहर के मंदिरों को भी 'नशिया' कहने की परम्परा है।

पुनश्च-**''अट्ठावयपव्वए.....जाओ अण्णाओ कावोवि णिसीहियाओ''।**

इन निर्वाणक्षेत्रों से अतिरिक्त जो और भी निषीधिकाएं हैं–इस वाक्य से तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणकों में से जन्मभूमि, केवलज्ञानभूमि आदि तीर्थ भी आ जाते हैं। अतः इस वाक्य से जन्मभूमियों की वंदना हो जाती है, क्योंकि प्रायः सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ ही चार-चार कल्याणकों से पवित्र हैं। अयोध्या में श्री ऋषभदेव के गर्भ, जन्म ऐसे दो कल्याणक हुए हैं। दीक्षा एवं केवलज्ञान प्रयाग में हुआ है। शेष श्री अजितनाथ आदि चारों तीर्थंकरों के यहीं पर चार-चार कल्याणक हुए हैं।

भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष–

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर (महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिला में) ऋषभगिरि पर विराजमान 108 फुट उत्तुंग सर्व ज्येष्ठ, श्रेष्ठ श्री ऋषभदेव प्रतिमा के चरण सान्निध्य में ''चैत्र कृष्णा नवमी'' श्री ऋषभजयंती (10 मार्च 2018) के पावन अवसर पर 'श्री ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष'' मनाने की घोषणा की थी। अगले वर्ष ईसवी सन् 2019 की ऋषभजयंती के दिन 'प्रभु की जन्मभूमि अयोध्या में इस शांतिवर्ष को एक वर्ष और मनाने की प्रेरणा दी थी।

इसी के अन्तर्गत टिकैतनगर (जिला-बाराबंकी) उ.प्र. में मेरे वर्षायोग में प्रतिदिन-101 दिनों तक भगवान ऋषभदेव की ''विश्वशांति पालकी यात्रा'', प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी गुरुदेव के दीक्षाशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत पालकी में आचार्यश्री की प्रतिमा एवं मेरे 86वें जन्मजयंती वर्ष के उपलक्ष्य में भी टिकैतनगर में घर-घर में,

प्रतिष्ठानों पर व राइस मिल...आदि स्थानों पर पालकीयात्रा बैण्ड-बाजे आदि प्रभावना के साथ सम्पन्न हुई, प्रतिदिन उत्सव-महोत्सव होता रहा। घर-घर में, प्रतिष्ठानों पर पंचामृताभिषेक, शांतिधारा, आचार्यश्री प्रतिमा की स्थापना के कार्यक्रम व गुरु के (मेरे) पादप्रक्षाल आदि कार्यक्रम प्रभावनापूर्ण सम्पन्न हुए। निकट में दरियाबाद, बाराबंकी, त्रिलोकपुर आदि ग्रामों में व लखनऊ (राजधानी) में भी ये 'पालकीयात्रा' के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

टिकैतनगर में वर्षायोग समाप्त कर पुनः कार्तिक शु. 5 को अयोध्या के लिए विहार कर कार्तिक शु. 8 को अयोध्या पहुँचकर कार्तिक शु. 10 को श्री भरतस्वामी मंदिर एवं श्री ऋषभदेव के 101 पुत्र सिद्धपदप्राप्त के मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। अयोध्या से पुनः टिकैतनगर आ गई।

पुनः मेरी टिकैतनगर जन्मभूमि (स्वयं की) वहाँ से मगसिर कृ. 6 को विहार कर माघ कृष्णा द्वितीया को (ईसवी सन् 2020) में हस्तिनापुर आ गई।

यहाँ भगवान शांतिनाथ के समवसरण की जिनप्रतिमाओं का पंचकल्याणक महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या की नूतन विकास योजनाएँ–

अभी पौष शु. पूर्णिमा को कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के यशस्वी अध्यक्ष ने घोषणा की है–

1. तीनलोक रचना का निर्माण, 2. सर्वतोभद्र महल, 3. तीस चौबीसी की प्रतिमाएं, जो रत्नों की सात सौ बीस (720) होंगी।

इन विकास योजनाओं की पूर्णता से जैन अयोध्या तीर्थ आकाश की ऊँचाईयों का स्पर्श करे एवं विश्वव्यापी श्री ऋषभदेव से लेकर श्री महावीरस्वामी के जैनशासन की **'अहिंसा परमो धर्मः'** की प्रभावना होती रहे।

यहाँ प्राचीन मंदिर (कटरा के जैनमंदिर) में क्षेत्रपाल व पद्मावती शासनदेवी विराजमान हैं।

श्री ऋषभदेव की बड़ीमूर्ति मंदिर में श्री ऋषभदेव के शासनदेव-गोमुख यक्षदेव व श्रीचक्रेश्वरी देवी तथा ऋषभदेव के जन्मभूमि स्थल के मंदिर में ये दोनों-गोमुख यक्ष, चक्रेश्वरी देवी विराजमान हैं। बड़ी मूर्ति मंदिर के आजू-बाजू त्रिकालचौबीसी मंदिर में क्षेत्रपाल एवं पद्मावती देवी तथा ऋषभदेव समवसरण मंदिर में गोमुख यक्षदेव एवं चक्रेश्वरी माता की मूर्तियाँ विराजमान हैं।

यहाँ शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विराजमान सभी तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएं व शासन देव-देवियाँ एवं क्षेत्रपाल देव सदैव तीर्थ की एवं अपने भक्तों की रक्षा करते रहें। सारे विश्व में क्षेम हो, शांति हो, मंगल होवे, इसी भावना के साथ सभी तीर्थंकर भगवन्तों को एवं तीर्थ को अनंत-अनंतबार नमस्कार होवे।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

जैनधर्म में दो शाश्वत तीर्थ माने हैं-अयोध्या और सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र। शाश्वत तीर्थ अयोध्या में ही हमेशा 24 तीर्थंकरों का जन्म होता रहा है। लेकिन इस बार हुण्डावसर्पिणी काल के दोष के कारण अयोध्या में केवल पाँच तीर्थंकरों ने जन्म लिया है, शेष 19 तीर्थंकरों ने अन्यत्र श्रावस्वती, कौशाम्बी, वाराणसी, चन्द्रपुरी आदि स्थानों पर जन्म लिया है। अतः वर्तमान में 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हो गई हैं।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्यशक्ति, भारतगौरव, परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या की महिमा को बताने के लिए एवं भगवन्तों की भक्ति में यह **'शाश्वत तीर्थ अयोध्या स्तुति संग्रह'** पुस्तक की रचना की है। इस पुस्तक की रचना में पूज्य माताजी ने अत्यधिक परिश्रम करके अयोध्या में निर्मित वर्तमान के जिनमंदिरों की, भगवान श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, चन्द्रप्रभ अदि की स्तुतियाँ लिखी हैं। तीन चौबीसी स्तुति, समवसरण स्तुति, भरतस्वामी, बाहुबली स्वामी आदि और भी अनेकों स्तुतियाँ दी हैं।

पूज्य माताजी ने इसमें भगवान ऋषभदेव आदि की हिन्दी काव्य में स्तुति, छंद सहित स्तुति एवं संस्कृत में सप्तविभक्ति समन्वित स्तुति दी हैं। इसमें से हिन्दी स्तोत्र की रचना वीर निर्वाण संवत् 2501, सन् 1975 में की थी। एकाक्षरी छंद संस्कृत स्तुति रचना भी ईसवी सन् 1975 में की एवं सप्तविभक्ति समन्वित स्तुतियाँ सन् 2018 में रची हैं।

स्तुति के साथ इस पुस्तक में अयोध्या में जन्में पाँचों तीर्थंकरों का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। साथ ही जैन ग्रंथों एवं वैदिक ग्रंथों से यह भी सिद्ध किया है कि भगवान ऋषभदेव के पुत्र **'भरत'** के नाम से हमारे देश का नाम **'भारत'** पड़ा है।

इसकी प्रशस्ति में पूज्य माताजी ने लिखा है कि अयोध्या में वीर निर्वाण संवत् 2545 में फाल्गुन सुदी द्वितीया को भगवान सुमतिनाथ का पंचकल्याणक पूर्ण हुआ, उस दिन इस **'शाश्वत तीर्थ अयोध्या स्तुति संग्रह'** को पूर्ण किया था। अब दो वर्ष के बाद इस पुस्तक के प्रकाशन का योग आया है।

पूज्य माताजी वह अनमोल निधि हैं, जो अपने ज्ञानरूपी खजाने से निकाल-निकाल कर हम सभी को एक-एक मोती प्रदान कर रही हैं। धन्य हैं ऐसी माता, जिनका सम्यग्दर्शन अत्यन्त निर्मल है एवं जिनका रोम-रोम भगवान की भक्ति में एवं जिनवाणी के सृजन में लगा रहता है। यह स्तुति संग्रह आप सभी के जीवन में सम्यग्दर्शन को दृढ़ करें और आप सभी अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, यही भगवान से प्रार्थना है।

हार्दिक उद्गार

-आर्यिका श्री सुव्रतमती माताजी

ज्ञान की सरिता ज्ञानमती, मातृ वत्सला जग माता।
उत्कृष्ट वैराग्य भावना की, स्वामिनी हो तुम माता।।
सम्यग्ज्ञान दीपिका औ, निःस्वार्थ धर्मसेविका हो।
अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी, चिन्तनशील साधिका हो।।1।।

प्रतिभाशाली विदुषी माता, दिव्य व्यक्तित्व तुम्हारा है।
चतुर्मुखी प्रतिभा की धारी, भारतगौरव नाम प्यारा है।।
जैन भूगोल की हो तुम विदुषी, सरस्वती की प्रतिमूर्ति।
श्रेष्ठ धर्मप्रभावक साध्वी, प्रज्ञा और पुरुषार्थ की मूर्ति।।2।।

विद्वानों की हो जननी, जिनवाणी की आराधिका हो।
ओजस्वी वाणी की स्वामिनी, भ्रमण करती ज्ञानशाला हो।।
वात्सल्यमूर्ति माँ 'श्रुतज्ञानी', ज्ञान ज्योति की अमर देन हो।
बीसवीं सदी की प्रथम बाल-ब्रह्मचारिणी से विभूति हो।।3।।

अलौकिक कार्यों की प्रणेत्री, जिनशासन की सेविका हो।
श्रमण संस्कृति की उन्नयनकर्त्री, संकल्पशक्ति की साधिका हो।।
पृथ्वी सम सहनशील माँ, जादुई व्यक्तित्व तुम्हारा है।
श्रावकों की सन्मार्गदर्शिका, रत्नत्रय गुण को धारा है।।4।।

संयम की अनमोल शिक्षिका, जैन वाङ्मय की सृजिका हो।
शास्त्रों की महानतम ज्ञाता, आर्ष परम्परा की संवाहिका हो।
नारी जाति का गौरव माता, कुशल आर्चीटेक्ट हो।
संस्कारों की जन्मदात्री, दृढ़ संकल्प की साक्षात् मूर्ति हो।।5।।

अमर रहेगी इस धरती पर, तेरी गौरव गाथा तब तक।
जब तक सूरज चाँद प्रकाशित, होता रहेगा पृथ्वी पर।।
शब्दातीत व्यक्तित्व की धारी, सूर्य समान तेजस्वी हो।
शब्दों की पुष्पांजलि माता, तेरे चरणों में अर्पित हो।।6।।

इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शान्तिसागर जी महाराज

जन्मतिथि	-	वीर नि. सं. 2398 आषाढ कृष्णा-6/ सन् 1872
जन्मस्थान	-	भोज ग्राम (कर्नाटक)
जन्मनाम	-	सातगौंडा पाटिल
माता-पिता	-	श्रीमती सत्यवती एवं श्री भीमगौंडा पाटिल
क्षुल्लक दीक्षा तिथि	-	वीर नि. सं. 2440 ,ज्येष्ठ शु. 13/ सन् 1914
स्थान	-	उत्तूर (जि. कोल्हापुर) महाराष्ट्र
क्षुल्लक दीक्षा गुरु	-	108 मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
ऐलक दीक्षा	-	वीर नि. सं. 2443 सन् 1917-गिरनार क्षेत्र पर स्वयं भगवान के चरण सानिध्य में
मुनि दीक्षा तिथि	-	वीर नि. सं. 2446 फाल्गुन शु. 14 / सन् 1920
मुनि दीक्षा स्थान	-	येरनाल जि. बेलगाँव (कर्नाटक)
मुनि दीक्षा गुरु	-	108 मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्य पद	-	वीर नि. सं. 2450 आश्विन शु. 11 सन् 1924 ग्राम-समडोली जि. सांगली (महा.) चतुर्विध संघ द्वारा।
चारित्र चक्रवर्ती पद	-	वीर नि. सं. 2463/सन् 1937/ गजपन्था सिद्धक्षेत्र पर (जैन समाज के द्वारा)
समाधिमरण	-	वीर नि. सं. 2481 द्वितीय भाद्रपद शु. 2, सन् 1955 कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र (महा.)

चारित्र चूड़ामणि प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज

जन्मतिथि	-वीर नि. सं. 2402 आषाढ़ शु. 15 सन् 1876
जन्मस्थान	-वीर ग्राम जि. औरंगाबाद (महा.)
जन्मनाम एवं गोत्र	-हीरालाल जैन, गोत्र-गंगवाल
माता-पिता	-श्रीमती भाग्यवती एवं श्री रामसुख जैन
क्षुल्लक दीक्षा	-वीर नि. सं. 2449 फाल्गुन शु. 7 सन् 1923
दीक्षा गुरु	-चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज
नाम	-क्षुल्लक श्री वीरसागर जी महाराज
मुनिदीक्षा तिथि	-वीर नि. सं. 2450 आश्विन शु. 11 सन् 1924
दीक्षा भूमि	-समडोली (महाराष्ट्र)
मुनि दीक्षा गुरु	-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज
आचार्य पद घोषणा	-वीर नि. सं. 2481 प्रथम भाद्रपद शु. 1, सन् 1955 में कुंथलगिरि पर श्री शान्तिसागर महाराज द्वारा
आचार्य पदारोहण	-वीर नि. सं. 2481 द्वितीय भाद्रपद कृ. 7 सन् 1955 में खानियाँ-जयपुर
समाधिमरण	-वीर नि. सं. 2483 आश्विन कृ. अमावस सन् 1957 में खानियाँ-जयपुर

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि।

21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील एवं 22 अक्टूबर 2018 को ऋषभदेवपुरम्-मांगीतुंगी (महा.) में माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द द्वारा पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का उद्घाटन।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (2015-2016) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृ. संख्या
1.	अनादिनिधन णमोकार महामंत्र	13
2.	वन्दना	14
3.	अयोध्या तीर्थ वंदना	14
4.	चौबीस तीर्थंकर इस अवसर्पिणी में हुए हैं	15
5.	अथ दृष्टाष्टक स्तोत्र (जिनमंदिर वंदना)	17
6.	देवदर्शन स्तुति	17
7.	देवदर्शन स्तोत्र	18
8.	श्री ऋषभदेव स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	19
9.	श्री ऋषभदेव स्तुति (हिन्दी काव्य)	19
10.	श्री ऋषभदेव स्तोत्र (छंद सहित)	21
11.	श्री अजितनाथ स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	23
12.	श्री अजितनाथ स्तुति (हिन्दी काव्य)	23
13.	श्री अजितजिन स्तोत्र (छंद सहित)	24
14.	श्री अभिनंदननाथ स्तुति (सप्तविभक्ति समन्वित)	26
15.	श्री अभिनंदन जिन स्तुति (हिन्दी काव्य)	26
16.	श्री अभिनंदन जिन स्तोत्र (छंद सहित)	27
17.	श्री सुमतिनाथ स्तोत्र (सप्तविभक्ति समन्वित)	28
18.	श्री सुमतिजिन स्तुति (हिन्दी काव्य)	29
19.	श्री सुमति जिन स्तोत्र (छंद सहित)	30
20.	श्री अनंतनाथ स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	31
21.	श्री अनंत जिन स्तुति (हिन्दी काव्य)	32
22.	श्री अनंत जिन स्तोत्र (छंद सहित)	33
23.	श्री धर्मनाथ स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	34
24.	श्री धर्मजिन स्तुतिः (हिन्दी काव्य)	34
25.	श्री चन्द्रप्रभ स्तुतिः (सप्त विभक्ति समन्वित)	35
26.	श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तुति (हिन्दी काव्य)	35
27.	चतुर्विंशति जिनस्तोत्रम् (संस्कृत)	37
28.	श्री ऋषभदेव स्तुतिः (दशावतारगर्भित)	39
29.	जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति (संस्कृत)	41
30.	जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति (हिन्दी काव्य)	42
31.	तीन चौबीसी मंत्र	43
32.	समवसरण स्तुति (हिन्दी काव्य)	45
33.	प्रथम पंचमहापुरुष स्तुतिः (संस्कृत)	47
34.	प्रथम पंच महापुरुष स्तुति (हिन्दी काव्य)	47

	विषय	पृ. संख्या
35.	पंच महापुरुष वंदना (लघु)	49
36.	श्री भरत स्वामी स्तुतिः (संस्कृत)	49
37.	श्री बाहुबलि स्वामी स्तुति (संस्कृत)	49
38.	ऋषभदेव के श्री भरत आदि 101 मोक्ष प्राप्त पुत्रों की वंदना	50
39.	श्री भरत चक्री के 923 मोक्ष प्राप्त पुत्रों की वंदना	50
40.	इक्ष्वाकुवंशीय सिद्धपरमेष्ठी वंदना एवं मंत्र	50
41.	ऋषभदेव-भरत-बाहुबली स्तुति (हिन्दी काव्य)	51
42.	त्रैलोक्य वंदनाष्टक (चैत्य वंदनाष्टक) (हिन्दी काव्य)	53
43.	तीस चौबीसी स्तुति (संस्कृत)	54
44.	श्री तीस चौबीसी नामावली स्तुति (हिन्दी काव्य)	55
45.	श्री सरस्वती स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	56
46.	केवलज्ञान लक्ष्मी माता की वंदना (संस्कृत)	56
47.	श्री गौतम स्वामी स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	57
48.	कुन्दकुन्द स्वामी की वंदना (संस्कृत)	57
49.	चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	57
50.	चारित्रचूड़ामणि आचार्यश्री वीरसागर स्तुतिः (सप्तविभक्ति समन्वित)	58
51.	आचार्य श्री देशभूषण स्तुतिः (संस्कृत)	58
52.	गणिनी श्री ब्राह्मी मातुः स्तुतिः (संस्कृत)	59
53.	गणिनी आर्यिका श्री ब्राह्मी माता की वंदना	60
54.	आर्यिका श्री सुंदरी माता आदि की वंदना	60
55.	ऋषभदेव के शासन की आर्यिकाओं की वंदना	60
56.	चौबीस तीर्थंकर के समवसरण की आर्यिकाओं की वंदना	61
57.	सर्व आर्यिका वंदना	61
58.	अनादिनिधन महामंत्र, तीर्थ आदि जो अनादि अनंत हैं	61
59.	प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जीवन दर्शन	62
60.	दूसरे तीर्थंकर भगवान अजितनाथ का जीवन दर्शन	63
61.	चौथे तीर्थंकर भगवान अभिनंदननाथ का जीवन दर्शन	64
62.	पाँचवें तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथ का जीवन दर्शन	65
63.	चौदहवें तीर्थंकर भगवान अनंतनाथ का जीवन दर्शन	66
64.	अयोध्या तीर्थ की महिमा	67
65.	श्री ऋषभदेव के पुत्र 'भरत' से 'भारत'	81
66.	प्रशस्ति	84
67.	जिनमंदिर व जिनप्रतिमा निर्माण का पुण्य (वसुनंदि श्रावकाचार से)	25
68.	जिनमंदिर में घंटा लगाने का पुण्य (वसुनंदि श्रावकाचार से)	36
69.	मंदिर में छत्र, चंवर, ध्वजा चढ़ाने का पुण्य (वसुनंदि श्रावकाचार से)	44
70.	देवदर्शन की महिमा (पद्मपुराण ग्रंथ से)	83

अयोध्या तीर्थ वंदना मंत्र

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाजितनाथाभिनंदननाथसुमतिनाथानंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवादितीर्थंकरजन्मभूमिशाश्वत-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरादि-मोक्षगामिमहापुरुषजन्मभूमि-अयोध्याशाश्वत-तीर्थक्षेत्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरजन्मभूमि-अयोध्यातीर्थक्षेत्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवभरतबाहुबलीऋषभसेन-अनंतवीर्यस्वामिभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं प्रथमतीर्थंकरश्रीऋषभदेव-प्रथमचक्रवर्तिभरत-प्रथमकामदेवबाहुबलि-प्रथमगणधरऋषभसेन-प्रथममोक्षप्राप्त-श्रीअनंतवीर्यस्वामिभ्यो नमः।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या के बारे में दशभक्त्यादिसंग्रह पुस्तक में लिखा है-

प्रलयकाल में 1 हजार योजन नीचे की भूमि नष्ट होती (जल जाती) है। प्रलयकाल समयी अयोध्यानगर स्थान के सूचक नीचे चौबिस कमल तथा श्री सम्मेदशिखर जी स्थान के सूचक नीचे चौबीस स्वास्तिक ऐसे चिन्ह देवों के द्वारा किया जाता है।[1]

1. दशभक्त्यादिसंग्रह, पृ. 162, प्रकाशन-वीर निर्वाण संवत् 2508 (सन् 1983), प्रकाशक-फलटण

शाश्वत तीर्थ अयोध्या स्तुति संग्रह

अनादिनिधन णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं – अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा – अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि – अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

वंदना

(श्री गौतमस्वामीकृत-निषीधिकादण्डक तथा चैत्यभक्ति से)

उड्ढमहतिरियलोए सिद्धायदणाणि णमंसामि, सिद्धणिसीहियाओ अट्ठावयपव्वए सम्मेदे उज्जंते चंपाए पावाए मज्झिमाए हत्थिवालियसहाए जावो अण्णाओ काओवि णिसीहियाओ जीवलोयम्मि।

ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और मध्यलोक में जितने भी सिद्धायतन जिनमंदिर हैं तथा इस मनुष्यलोक में अष्टापद पर्वत, सम्मेदशिखर, ऊर्जयंत-गिरनार, चंपापुरी, पावापुरी आदि जितने भी तीर्थंकर आदि भगवन्तों के जन्म, निर्वाण आदि क्षेत्र हैं, उन सबको मैं नमस्कार करता हूँ।

यावन्ति सन्ति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृतानि च। तानि सर्वाणि चैत्यानि, वंदे भूयांसि भूतये[1]।।18।।

इस जग में जितनी प्रतिमा हैं, कृत्रिम अकृत्रिम सबको।
मैं वंदूँ शिववैभव हेतू, सब जिनचैत्य जिनालय को।।18।।

अयोध्या तीर्थ वंदना

अयोध्या मंगलं कुर्या-दनंततीर्थकर्तृणाम्। शाश्वती जन्मभूमिर्या, प्रसिद्धा साधुभिर्नुता।।1।।
ऋषभोऽजिततीर्थेशो-ऽप्यभिनंदनतीर्थकृत्। श्रीमान् सुमतिनाथश्चा-नन्तनाथजिनेश्वरः।।2।।
पंचतीर्थकृतां गर्भ-जन्मकल्याणकादिषु। इंद्रादिभिः सदा वंद्या, वंद्यते वंदयिष्यते।।3।।
असंख्यात-मुक्तिगानां, भरतादिनृणामपि। जन्मभूमिर्मया भक्त्या, त्रिसंध्यं वन्द्यते मुदा।।4।।

अनंतों तीर्थंकरों की जन्मभूमि 'अयोध्या' यह शाश्वत तीर्थ है। यह तीर्थ साधुओं के द्वारा भी नमस्कृत है, ऐसा यह अयोध्या तीर्थ मंगल करे, हम सभी के लिए मंगलकारी होवे।।1।। यह अयोध्या श्री ऋषभदेव, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ एवं अनंतनाथ इन पाँच तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म आदि कल्याणकों में इन्द्र आदि देवगणों के द्वारा सदा वंदित रही है, वर्तमान में वंदना को प्राप्त हो रही है एवं भविष्य में भी सभी के द्वारा वंद्य होती रहेगी।।2-3।। भरत चक्रवर्ती आदि असंख्यातों महापुरुषों ने अयोध्या जन्मभूमि में जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त किया है। ऐसी अयोध्यापुरी को मेरा तीनों कालों में भक्ति एवं प्रीतिपूर्वक अनंतबार नमस्कार होवे।।4।।

भावार्थ - इस अयोध्या में वर्तमान में श्री ऋषभदेव के गर्भ, जन्म दो कल्याणक एवं शेष द्वितीय, चतुर्थ, पंचम एवं चौदहवें तीर्थंकर के गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान ऐसे 4-4 कल्याणक हुए हैं।

दोहा- **तीर्थंकर को वंदते, जन्मभूमि वंदंत।**
तीर्थंकर को तीर्थ को, नमूँ मिले भव अंत।।1।।

---

1. चैत्यभक्ति

चौबीस तीर्थंकर इस अवसर्पिणी में हुए हैं–

1. श्री ऋषभदेव	2. श्री अजितनाथ
3. श्री संभवनाथ	4. श्री अभिनंदननाथ
5. श्री सुमतिनाथ	6. श्री पद्मप्रभनाथ
7. श्री सुपार्श्वनाथ	8. श्री चन्द्रप्रभनाथ
9. श्री पुष्पदंतनाथ	10. श्री शीतलनाथ
11. श्री श्रेयांसनाथ	12. श्री वासुपूज्यनाथ
13. श्री विमलनाथ	14. श्री अनंतनाथ
15. श्री धर्मनाथ	16. श्री शांतिनाथ
17. श्री कुंथुनाथ	18. श्री अरनाथ
19. श्री मल्लिनाथ	20. श्री मुनिसुव्रतनाथ
21. श्री नमिनाथ	22. श्री नेमिनाथ
23. श्री पार्श्वनाथ	24. श्री महावीरस्वामी

इनमें प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम व चौदहवें तीर्थंकर इसी अयोध्या में जन्मे हैं। शेष तीर्थंकर अन्यत्र जन्में हैं। यह हुण्डावसर्पिणी का निमित्त माना है।

अवसप्पिणिउस्सप्पिणिकाल च्चिय रहटघटियणाएणं।
होंति अणंताणंता भरहेरावदखिदिम्मि पुढं[1]।।1614।।

भरत और ऐरावत क्षेत्र में रँहटघटिकान्याय से अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल अनन्तानन्त होते हैं। (अर्थात् जिस प्रकार रँहट की घरियां बार-बार ऊपर व नीचे आती-जाती हैं, इसी प्रकार अवसर्पिणी के पश्चात् उत्सर्पिणी और उत्सर्पिणी के पश्चात् अवसर्पिणी, इस क्रम से सदा इन कालों का परिवर्तन होता ही रहता है)।।1614।।

अवसप्पिणिम्मि काले तहेव उवसप्पिणिम्मि कालम्मि।
उप्पज्जंति महप्पा तेसट्ठिसलागवरपुरिसा[2]।।208।।

अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी काल में तिरेसठ शलाका महापुरुष उत्पन्न होते हैं।।208।।

अवसप्पिणिउस्सप्पिणिकालसलाया गदे य संखाणिं।
हुंडावसप्पिणी सा एक्का जाएदि तस्स चिण्हमिमं[3]।।1615।।

असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीकाल की शलाकाओं के बीत जाने पर प्रसिद्ध एक हुण्डावसर्पिणी आती है, उसके चिन्ह ये हैं।।1615।।

विशेषार्थ–हुंडावसर्पिणी में कुछ अघटित घटनाएं हुई हैं। जैसे-प्रथम तीर्थंकर तीसरे काल में हो गये आदि। इसी निमित्त से अयोध्या में पाँच तीर्थंकर ही जन्मे हैं। शेष तीर्थंकरों की अन्य जन्मभूमियाँ मिलाकर सोलह हो गई हैं।

1. तिलोयपण्णत्ति, पृ. 354। 2. जम्बूद्वीपपण्णत्ति, पृ. 31। 3. तिलोयपण्णत्ति, पृ. 354।

ताभ्यामलंकृते पुण्ये देशे कल्पांघ्रिपात्यये।
तत्पुण्यैर्मुहुराहूतः पुरूहूतः पुरीं व्यधात्[1]।।69।।

मरुदेवी और नाभिराज से अलंकृत पवित्र स्थान में जब कल्पवृक्षों का अभाव हो गया, तब वहाँ उनके पुण्य के द्वारा बार-बार बुलाये हुए इन्द्र ने एक नगरी की रचना की।

संचस्करुश्च तां वप्रप्राकारपरिखादिभिः।
अयोध्यां न परं नाम्ना गुणेनाप्यरिभिः सुराः[2]।।76।।

देवों ने उस नगरी को वप्र (धूलि के बने हुए छोटे कोट), प्राकार (चार मुख्य दरवाजों से सहित, पत्थर के बने हुए मजबूत कोट) और परिखा आदि से सुशोभित किया था। उस नगरी का नाम अयोध्या था। वह केवल नाममात्र से अयोध्या नहीं थी किन्तु गुणों से भी अयोध्या थी। कोई भी शत्रु उससे युद्ध नहीं कर सकते थे इसलिए उसका वह नाम सार्थक था (अरिभिः योद्धुं न शक्या-अयोध्या)।।76।।

पुण्येऽहनि मुहूर्त्ते च शुभयोगे शुभोदये।
पुण्याहघोषणां तत्र सुराश्चक्रुः प्रमोदिनः[3]।।81।।

विश्वद्दृश्वैतयोः पुत्रो जनितेति शतक्रतुः।
तयोः पूजां व्यधत्तोच्चैरभिषेकपुरस्सरम्[4]।।83।।

षड्भिर्मासैरथैतस्मिन् स्वर्गादवतरिष्यति।
रत्नवृष्टिं दिवो देवाः पातयामासुरादरात्[5]।।84।।

खाङ्गणे गणनातीता रत्नधारा रराज सा।
विप्रकीर्णेव कालेन तरला तारकावली[6]।।92।।

अनन्तर उस अयोध्या नगरी में सब देवों ने मिलकर किसी शुभ दिन, शुभ मुहूर्त, शुभ योग और शुभ लग्न में हर्षित होकर पुण्याहवाचन किया।।81।।

इन दोनों के (महाराजा नाभिराज व महारानी मरुदेवी) सर्वज्ञ ऋषभदेव पुत्र जन्म लेंगे। यह समझकर इन्द्र ने अभिषेकपूर्वक उन दोनों की बड़ी पूजा की थी।।83।।

तदनन्तर छह महीने बाद ही भगवान ऋषभदेव यहाँ स्वर्ग से अवतार लेंगे, ऐसा जानकर देवों ने बड़े आदर के साथ आकाश से रत्नों की वर्षा की।।84।।

आकाशरूपी आंगन में वह असंख्यात रत्नों की धारा ऐसी जान पड़ती थी, मानों समय पाकर फैली हुई नक्षत्रों की चंचल और चमकीली पङ्क्ति ही हो।।92।।

कृतप्रथममाङ्गल्ये, सुरेन्द्रो जिनमंदिरम्।
न्यवेशयत् पुरस्यास्य, मध्ये दिक्ष्वप्यनुक्रमात्।।150।।[7]

अर्थ—इन्द्र ने प्रथम ही मांगलिक कार्य किया और फिर उसी अयोध्यापुरी के बीच में जिनमंदिर की रचना की। इसके बाद पूर्व, दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर इस प्रकार चारों दिशाओं में भी यथाक्रम से जिनमंदिरों की रचना की, तभी से जिनमंदिर निर्माण की परम्परा चली आ रही है।।150।।

---

1. आदिपुराण, भाग-1, पृ. 255। 2. आदिपुराण, भाग-1, पृ. 256। 3-4-5. आदिपुराण, भाग-1, पृ. 257। 6. आदिपुराण, भाग-1, पृ. 258। 7. आदिपुराण पर्व 16, पृ. 359।

अथ दृष्टाष्टक स्तोत्र

(जिनमंदिर वंदना)

दर्शन के लिए श्री जिनमंदिर को जावे। मंदिर का शिखर दिखते ही इस दृष्टाष्टक स्तोत्र को पढ़ते हुए मंदिर के पास पहुँचे अथवा मंदिर के पास पहुँचकर मंदिर की प्रदक्षिणा देते हुए दृष्टाष्टक स्तोत्र पढ़ें।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि, भव्यात्मनां विभवसंभवभूरिहेतु।
दुग्धाब्धिफेनधवलोज्वलकूटकोटि-नद्धध्वजप्रकरराजिविराजमानम्।।1।।
दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भुवनैकलक्ष्मी-धामर्द्धिवर्द्धितमहामुनिसेव्यमानम् ।।
विद्याधरामरबधूजनपुष्पदिव्य-पुष्पांजलिप्रकरशोभितभूमिभागम् ।।2।।

पुनः उचित स्थान पर पैर धोकर चैत्यालय के अन्दर प्रवेश करें। "निःसही निःसही निःसही" ऐसा उच्चारण करके श्री जिनेन्द्रदेव के मुख को देखकर नमस्कार करके "निःसंगोऽहं जिनानां" इत्यादिरूप से प्रसिद्ध 'ईर्यापथशुद्धि' नामक स्तोत्र को पढ़ें। यदि जिनमंदिर की बाहर से प्रदक्षिणा नहीं है तो इसी 'निःसंगोऽहं' स्तोत्र को पढ़ते हुए वेदी में विराजमान जिनेन्द्रदेव की तीन प्रदक्षिणा देवें।

देवदर्शन स्तुति

निःसंगोहं जिनानां सदनमनुपमं त्रिःपरीत्येत्य भक्त्या।
स्थित्वा गत्वा निषद्योच्चरणपरिणतोऽन्तः शनैर्हस्तयुग्मम्।।
भाले संस्थाप्य बुद्ध्या मम दुरितहरं कीर्तये शक्रवंद्यं।
निंदादूरं सदाप्तं क्षयरहितममुं ज्ञानभानुं जिनेंद्रम् ।।1।।

हे भगवन् ! मैं निःसंग हो, जिनगृह की प्रदक्षिणा करके।
भक्ती से प्रभु सन्मुख आकर, करकुड्मल शिर नत करके।।
निंदारहित दुरितहर अक्षय, इंद्रवंद्य श्री आप्त जिनेश।
सदा करूँ संस्तवन मोहतमहर! तव ज्ञानभानु परमेश।।1।।

श्रीमत्पवित्रमकलंकमनंतकल्पं, स्वायंभुवं सकलमंगलमादितीर्थम्।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानां, त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये।।2।।

जिनमंदिर श्रीयुत पावन, अकलंक अनंतकल्प सच में।
स्वयं हुए अकृत्रिम सब, मंगलयुत प्रथम तीर्थ जग में।।
नित्य महोत्सव सहित मणीमय, जिनवर चैत्यालय उत्तम।
तीन लोक के भूषण उनकी, शरण लिया मैं हे भगवन्।।2।।

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांक्षनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ।।3।।

स्याद्वादमय अमोघ शासन, श्रीमत् सदा परम गंभीर।
त्रिभुवनपति शासन जिनशासन, सदा रहे जयशील सुधीर।।3।।

श्रीमुखालोकनादेव श्रीमुखालोकनं भवेत् ।
आलोकनविहीनस्य तत्सुखावाप्तयः कुतः।।4।।

श्रीमुख के अवलोकन से, श्रीमुख का अवलोकन होता।
अवलोकन से रहित जनों को, वह सुख प्राप्त कहाँ होता।।4।।

अद्याभवत् सफलता नयनद्वयस्य, देव! त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन।
अद्य त्रिलोकतिलक! प्रतिभासते मे, संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम् ।।5।।

हे भगवन् ! मम नेत्र युगल शुचि, सफल हुए हैं आज अहो।
तव चरणांबुज का दर्शन कर, जन्म सफल है आज अहो।।
हे त्रैलोक्य तिलक जिन! तव, दर्शन से प्रतिभासित होता।
यह संसार वार्धि चुल्लुक, जलसम हो गया अहो ऐसा।।5।।

देवदर्शन स्तोत्र

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।।1।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।।2।।

वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-सम-प्रभं।
जन्म-जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।3।।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम्।।4।।

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधे।।5।।

श्री ऋषभदेव स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

-अनुष्टुप् छंदः-

प्रभुः ऋषभदेवस्त्वं, जगत्सृष्टा जगद्गुरूः।
ऋषभदेवमानौमि, सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।1।।

हतः ऋषभदेवेन, स्वकर्मनिचयः स्वयं।
नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।।2।।

तीर्थं ऋषभदेवाद् हि, स्वर्गमोक्षविधायकम्।
धर्मः ऋषभदेवस्य, साधुगृहि-द्विभेदतः।।3।।

भक्तिं ऋषभदेवेऽहं, करोमि सर्वसौख्यदाम्।
ऋषभदेव! मां रक्ष, निमज्जंतं भवाम्बुधौ।।4।।

*****

श्री ऋषभदेव स्तुति

(हिन्दी काव्य)

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

आषाढ़ वदी दुतिया तिथि थी, मरूदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैत्र वदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्में।
तब मेरू सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।

वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।
प्रभु ने असि मसि आदिक किरिया, उपदेशी आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक मुनि मार्ग विधाता थे।।3।।

थे कनक वर्ण धनु[1] पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षण[2] धारी थे।।
दीक्षा से तीर्थ प्रयाग बना, जहाँ नग्न दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोच करा।।4।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।

षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहारदान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैशाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।

अक्षय वटवृक्ष तले तिष्ठे, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।
त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु को स्वयं मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भवदधि से निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे वृषभेश! मुझे, शुभ ''ज्ञानमती'' श्री देवें झट।।8।।

1. एक धनुष में चार हाथ, ऐसे दो हजार हाथ ऊँचा शरीर था। 2. बैल चिन्ह।

श्री ऋषभदेव स्तोत्र

(छंद सहित)

श्रीछन्दः – (1 अक्षरी)

ॐ, मां। सोऽ-व्यात्।।1।।

स्त्रीछन्दः – (2 अक्षरी)

जैनी, वाणी। सिद्धिं, दद्यात्।।2।।

केसाछन्दः – (3 अक्षरी)

गणीन्द्र!, त्वदंघ्रिं। नमामि, त्रिकालं।।3।।

मृगीछन्दः – (3 अक्षरी)

श्री-जिनैः, संततं। मन्मनः, पूयताम्।।4।।

नारीछन्दः – (3 अक्षरी)

श्री-देवो, नाभेयः। वंदेऽहं, तं मूर्ध्ना।।5।।

कन्याछन्दः – (4 अक्षरी)

पूः साकेता, पूता जाता। त्वत्सूतेः सा, सेंद्रैर्मान्या।।6।।

व्रीडाछन्दः – (4 अक्षरी)

महासत्यां, मरुदेव्यां। सुतोऽभूस्त्वं, जगत्पूज्यः।।7।।

लासिनीछन्दः – (4 अक्षरी)

युगादिजो, जिनेश्वरः। ददातु मे, शिवश्रियं।।8।।

सुमुखीछन्दः – (4 अक्षरी)

नाभिनृपः, तेऽस्ति पिता। आदिजिनः, पातु मम।।9।।

सुमतिछन्दः – (4 अक्षरी)

सुखकारी, भवहारी। पुरुदेवो, वस मेऽन्तः।।10।।

समृद्धिछन्दः – (4 अक्षरी)

ज्ञानसिंधुं, सर्वबंधुं। सर्व सिद्ध्यै, नौमि नित्यं।।11।।

पंक्तिछन्दः – (5 अक्षरी)

हाटकवर्णं, सद्गुण-पूर्णम्।
सिद्धिवधूस्त्वां, सा स्म वृणीते।।12।।

शशिवदनाछन्दः – (6 अक्षरी)

मुनिनुतपादः, त्रिभुवननाथः।
विगलितमोहः, निजसुखमाप्नोत्।।13।।

मदलेखा छंदः – (7 अक्षरी)

देवेन्द्रैः परिपूज्यो, योगीन्द्रैरनुचिन्त्यः।
चक्रेशैरभिवंद्यो, वंदे तं वृषभेशम्।।14।।

अनुष्टुप् छन्दः – (8 अक्षरी)

आषाढेऽसितपक्षे स्याद्, द्वितीया तिथिरुत्तमा।
सर्वार्थसिद्धितश्च्युत्वा, मातुर्गर्भे समागतः।।15।।
नवम्यां चैत्रकृष्णे त्वं, जन्म प्राप्य प्रजापतिः।
ब्रह्मा सृष्टा विधाताभूद्, युगादौ तीर्थनायकः।।16।।
चैत्रकृष्णे नवम्यां हि, स्वयंभूर्दीक्षितोऽभवत्।
फाल्गुनेऽसितपक्षेऽभू-देकादश्यां सुकेवली।।17।।
माघकृष्णे चतुर्दश्यां, कैलाशे गिरिमस्तके।
निर्वृतिं परमां लब्ध्वा, सिद्धिकांतापति-र्बभौ।।18।।
आयुश्चतुरशीत्यामा, लक्षपूर्व-प्रमाणकः।
इक्ष्वाकुवंशभास्वान् यो, पुरुदेवो पुनातु मे।।19।।
द्विसहस्रकरोत्तुंगो, वृषभो वृषलाञ्छनः।
जीयात् त्रैलोक्यनाथोऽसौ, स्याद्वादामृतशासनः।।20।।

शार्दूलविक्रीडित छन्दः – (19 अक्षरी)

यः क्रोधादिरिपून् विजित्य सहसा, स्वात्मोत्थ-सौख्यामृतं।
पायं पायमहर्निशं भवभयात्, स्वात्मानमुद्धृत्य वै।।
त्रैलोक्याग्रपदे धृतश्च, निवस-त्यद्याप्यनंतावधि।
दिश्यात् श्रीऋषभो स एष भगवान्, मे ज्ञानमत्यै श्रियं।।21।।

श्री अजितनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीमानजितनाथस्त्वं, द्वितीयस्तीर्थकृन्मतः।
श्रयाम्यजितनाथं त्वां, संसारोत्तरणेच्छया।।1।।

मार्गोऽप्यजितनाथेन, शिवस्योद्घाटितो गिरौ।
तुभ्यमजितनाथाय, नमो नमोऽस्त्वनंतशः।।2।।

तीर्थमजितनाथात् हि, सर्वेषां हितशासनं।
श्रीमतोऽजितनाथस्य, धर्मः प्राणिदयाकरः।।3।।

तीर्थेशेऽजितनाथे मे, प्रीतिः नित्यं शिवप्रदा।
अजितनाथ! मां रक्ष, यावन्निर्वाणमाप्नुयाम्।।4।।

श्री अजितनाथ स्तुति

(हिन्दी काव्य)

इन्द्रिय विषयों को जीत अजित, प्रभु ख्यात हुए कर्मारिजयी।
त्रिभुवन पूज्या सुरगण मान्या, वह पुरी अयोध्या विजित मही।।
माता विजया भी धन्य हुईं, जितशत्रु पिता भी धन्य हुए।
इक्ष्वाकु वंश के भास्कर को, कर उदित उभय जग वंद्य हुए।।1।।

वह ज्येष्ठ अमावस्या शुभ थी, प्रभु गर्भ महोत्सव इन्द्र किया।
सुर ललनाओं ने माता की, सेवा कर अतिशय पुण्य लिया।।
वर माघ सुदी दशमी तिथि थी, सुरशैल शिखर पर इन्द्रों ने।
अभिषेक महोत्सव करके फिर, शृँगार किया प्रभु का शचि ने।।2।।

अठरह सौ हाथ तनू स्वर्णिम, बाहत्तर लक्ष पूर्व आयु।
देवों के लाए भोजन औ, भूषण वसनादि भोग्य वस्तु।।
प्रभु ने न यहाँ के वस्त्र धरे, नहिं भोजन कभी किया घर का।
नित सुर बालक खेलें संग में, औ इन्द्र सदा ही किंकर था।।3।।

शुभ माघ सुदी नवमी सुरगण, लौकांतिक सुरगण भी आए।
प्रभु द्वारा तजे वसन भूषण, औ केश पयोदधि पधराये।।
प्रभु घोर तपश्चर्या करते, शुद्धात्म ध्यान में लीन हुए।
तब ध्यान अग्नि के द्वारा ही, झट कर्मवनी को दग्ध किये।।4।।
वह पौष सुदी एकादशि थी, प्रभु ज्ञानानंद स्वभावी थे।
विजितेन्द्रिय केवलज्ञान लिए, घट-घट के अन्तर्यामी थे।।
धर्मामृत वृष्टि से भविजन, तरु को सींचा पुष्पित कीना।
वे स्वर्ग मोक्ष से फलित हुए, अगणित को अपने सम कीना।।5।।
थी चैत्र सुदी पंचमि प्रभु ने, पंचमगति का साम्राज्य लिया।
वे पंचकल्याणक के नायक, भव पंचभ्रमण का नाश किया।।
'गज' चिन्ह से जाने जाते वे, मुझको भी पंचमगति देवें।
सब रोग शोक से प्रगट हुए, भव दुःखों को झट हर लेवे।।6।।
हे अजितनाथ! बाधा विरहित, शिव सौख्य प्रदान करो मुझको।
प्रभु! पूर्णज्ञान साम्राज्य श्री, मेरी तुरन्त देवो मुझको।।
हे नाथ नमोस्तु है तुमको, हे अजित! अजय पद को दीजे।
भगवन्! मुझको श्री ''ज्ञानमती'' सुखसिद्धि समृद्धि भी कीजे।।7।।

श्री अजित जिन स्तोत्र

(छंद सहित)

प्रीति छन्दः—(5 अक्षरी)

कर्मजित्योऽभूत्, सोऽजितः ख्यातः।
तीर्थकृन्नाथः, तं नुवे भक्त्या।।1।।

सती छन्दः—(5 अक्षरी)

पुरी विनीता, भुवि प्रसिद्धा।
त्रिलोक-पूज्या, सुरेन्द्रवंद्या।।2।।

मन्दा छन्दः—(5 अक्षरी)

माता विजया, धन्या भुवने।
देवैर्महितं, पुत्रं जनिता।।3।।

तनुमध्या छन्दः –(6 अक्षरी)

इक्ष्वाकुकुलस्य, सूर्यो गजचिन्हः।
स्वर्णाभतनुः सः, मां रक्षतु पापात्।।4।।

शशिवदना छन्दः –(6 अक्षरी)

खयुगदिशैकः, करतनुतुंगः।
भुवि जितशत्रुः, तव जनकः स्यात्।।5।।

सावित्री छन्दः –(6 अक्षरी)

द्वासप्तत्या लक्ष-पूर्वाण्यायुः प्राप्तः।
ज्ञानानंदापूर्णः, पायात् मे संसारात्।।6।।

अनुष्टुप् छन्दः –

ज्येष्ठेऽमावस्या शुभदा, दशमी माघ-शुक्लके।
तन्मासे नवमी, पुण्यै-कादशी पौषशुक्लके।।7।।
पंचमी चैत्रशुक्ला च, पंचकल्याणकैः क्रमात्।
तिथयोऽजितनाथस्य, ता मे दद्युः परां गतिं।।8।।

मालिनी छन्दः –

नुद नुद भवदुःखं, रोगशोकादिजातं।
कुरु कुरु शिवसौख्यं, वीतबाधं विशालं।।
तनु तनु मम पूर्ण-ज्ञानसाम्राज्यलक्ष्मीं।
भव भव सुखसिद्धयै, ज्ञानमत्यै जिनेश!।।9।।

जिनमंदिर व जिनप्रतिमा निर्माण का पुण्य

कुत्थुंभरिदलभेत्ते जिणभवणे जो ठवेइ जिणपणिमं।
सरिसवमेत्तं पि लहेइ सो णरो तित्थयरपुण्णं।।481।।
जो पुण जिणिंदभवणं समुण्णयं परिहि-तोरणसमग्गं।
णिम्मावइ तस्स फलं को सक्कइ वण्णिउं सयलं।।482।।

अर्थ-जो मनुष्य कुथुंम्भरी (धनिया) के दलमात्र अर्थात् पत्र बराबर जिनभवन बनवाकर उसमे सरसों के बराबर भी जिनप्रतिमा को स्थापित करता है, वह तीर्थंकर पद पाने के योग्य पुण्य को प्राप्त करता है, तब जो कोई अति उन्नत और परिधि, तोरण आदि से संयुक्त जिनेन्द्र भवन बनवाता है, उसका समस्त फल वर्णन करने के लिए कौन समर्थ हो सकता है?।।481- 482।। (वसुनंदिश्रावकाचार)

श्री अभिनंदननाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

अभिनन्दननाथस्त्वं, भव्यानंदप्रदायकः।
अभिनंदननाथं त्वा-माश्रयन्ति जना मुदा।।1।।

अभिनंदननाथेन, प्रोक्ता सिद्धेर्विधिर्भुवि।
अभिनंदननाथाय, नमोऽस्तु त्रिविधं मम।।2।।

अभिनंदननाथाद् हि, स्वात्मानंदं वितन्वते।
अभिनंदननाथस्य, वाणी स्वात्मसुखाकरा।।3।।

अभिनन्दननाथेऽहं, कुर्वे भक्तिं शिवप्रदां।
अभिनंदननाथ! त्वं, ईप्सितं मम पूरय।।4।।

श्री अभिनंदनजिन स्तुति

(हिन्दी काव्य)

निज आत्म सुखामृत सारभूत!, भय शोक मान से रहित सदा।
हे वीतराग परमात्मप्रभो!, तुमको नमोऽस्तु हो मुदा सदा।।
सकलज्ञ सूर्य! सुखरत्नाकर, हे सर्वलोकमणि तीर्थंकर।
हे जगत्पिता भाक्तिक जन के, गुरु भव से त्राण करो जिनवर।।1।।

त्रिभुवन चूड़ामणि सुखदाता, चिन्तामणि कल्पतरु तुम हो।
मेरे मन में आनंद भरो, हे अभिनन्दन! भव कंद हरो।।
वह पुरी विनीता पूज्य हुई, इक्ष्वाकुवंश के चन्द्र हुए।
जननी सिद्धार्था मान्य हुई, औ पिता 'स्वयंवर' धन्य हुए।।2।।

वैशाख सुदी षष्ठी के दिन, प्रभु का गर्भोत्सव इन्द्र किया।
वर माघ सुदी द्वादश तिथि को, मंदरगिरि पर अभिषेक हुआ।।
आयु है लक्षपचासपूर्व, चौदह सौ कर तनुतुंग कहा।
कनकच्छवि, मर्कटलांछनयुत, मनमर्कट को झट वश्य किया।।3।।

फिर माघ सुदी बारस आयी, धन त्याग तपोधन कहलाये।
चौदस थी पौष सुदी जब ही, कैवल्यरमापति सुर गाये।।
वैशाख सुदी षष्ठी के दिन, शिवकांता के भर्तार हुए।
सहजात्म समुद्भव आल्हादक, परमामृत सुख आनंद लिए।।4।।

सुखवर्द्धन हे अभिनन्दन! तव, वचनामृत भुवि आनंद करो।
भव सागर में डूबे जन को, तुम पोत सदृश अवलंबन हो।।
मम अन्तःकरण पवित्र करो, सब जन मन को भी शुद्ध करो।
मम ''ज्ञानमती'' लक्ष्मी मुझको, देकर झट हे जिन! तृप्त करो।।5।।

श्री अभिनंदन जिन स्तोत्र

(छंद सहित)

कुमारललिता छन्दः—(7 अक्षरी)

निजात्मसुखसारो, विशोकभयमानः।
विरागपरमात्मा, नमोऽस्तु मम तुभ्यं।।1।।

मधुमती छन्दः—(7 अक्षरी)

सकलबोधरविः, सकलसौख्यखनिः।
सकललोकमणिः, जयतु तीर्थकरः।।2।।

हंसमाला छन्दः—(7 अक्षरी)

स पिता देहभाजां, स गुरुर्भक्तिभाजां।
स जिनः पातु दुःखात्, तनुतान् मे स्वलक्ष्मीं।।3।।

चूड़ामणि छन्दः—(7 अक्षरी)

चूड़ामणिर्भुवने, चिंतामणिः सुखदः।
कल्पद्रुमस्त्वमपि, स्थेयात् सदा हृदि मे।।4।।

प्रमाणिका छन्दः—(8 अक्षरी)

जगत्त्रयं पवित्रितं, जगत्त्रयैकवित् गुरुः।
मयाभिनंदनः प्रभुः, प्रणम्यते मुदा सदा।।5।।

अनुष्टुप् छन्दः –

स्वयंवरः पितासीत्ते, सिद्धार्था जननी शुभा।
विनीता पूः प्रपूज्या स्याद्, इक्ष्वाकुवंशचंद्रमाः।।6।।
पंचाशल्लक्षपूर्वायुः, सार्द्धत्रिशतचापमः।
पंचकल्याणपूजाप्तः, कपिचिन्हसमन्वितः।।7।।
वैशाखस्य सिते षष्ठ्यां, मातुर्गर्भे समागतः।
द्वादश्यां माघशुक्लायां, जन्माभिषेकमाप्तवान्।।8।।
तत्तिथावेव दीक्षां च, गृहीत्वा स तपोधनः।
पौषे शुक्लचतुर्दश्यां, केवलिश्रियमाप्तवान्।।9।।
गर्भतिथौ विमुक्तोऽभूत्, परमानंद-सौख्यभृत्।
निरंजनो निराकारः, त्रिलोकैकशिखामणिः।।10।।

उपजाति छन्दः – (11 अक्षरी)

सुखाभिनंदादभिनंदनो यः, जगत्त्रयं नंदितवान् वचोभिः।
पोतायमानो भवसिंधु-गानां, पुनातु मेऽन्तः स हि देहिनां च।।11।।

श्री सुमतिनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीमान् सुमतिनाथस्त्वं, मोहध्वांतविनाशकः।
भव्याः सुमतिनाथं त्वां, भजंतीह सुबुद्धये।।1।।

श्रीमत्सुमतिनाथेन, हताः कर्मारयः स्वयं।
तस्मै सुमतिनाथाय, नमः स्वकर्महानये।।2।।

तीर्थं सुमतिनाथाद् यत्, तत् सर्वेषां सुखावहं।
श्रीमत् सुमतिनाथस्य, शरण्यं चरणद्वयं।।3।।

तस्मिन् सुमतिनाथे हि, मतिं स्थिरां करोम्यहं।
प्रभो! सुमतिनाथ! त्वं, देहि मे पंचमीं गतिं।।4।।

श्री सुमतिजिन स्तुति

(हिन्दी काव्य)

जिनके वक्त्राम्बुज से निकली, दिव्यध्वनि अमृतरस झरिणी।
जो चित्तकुमति हरणी मन में, चैतन्य सुधारस की भरणी।।
उन सुमतिनाथ को वंदूँ मैं, वे ज्ञान ज्योति आनन्दघन हैं।
निज शुद्धात्मा को ध्या ध्याकर, कर्मारिनाश शिवधाम रहें।।1।।

यह आत्मा सिद्ध सदृश मेरी, चिच्चैतन्यामृत पूर्ण भरी।
यह ज्ञानानंद स्वभावमयी, प्रभु ने मुझमें ये सुमति भरी।।
हे भव्य कमलिनी सूर्य प्रभो! योगीन्द्र चित्त गोचर सुमते।
मुझ मन में सदा निवास करो, अगणित गुणसागर सिद्धिपते।।2।।

साकेतपुरी इक्ष्वाकुवंश, में पिता मेघरथ मान्य हुए।
मंगल जननी मंगलावति की, श्रीआदि देवियाँ सेव करें।।
श्रावण सुदि दुतिया में गर्भे, अवतार हुए मंगलकारी।
शुभ चैत्रसुदी एकादशि को, जन्मोत्सव इन्द्र किया भारी।।3।।

वैशाखसुदी नवमी तिथि में, दीक्षा लक्ष्मी ने वरण किया।
सित चैत्र इकादशि में तुमने, कैवल्य बोध साम्राज्य लिया।।
इस तिथि में सम्मेदाचल से, प्रभुवर लोकांत विराजे जा।
त्रिभुवन के स्वामी सिद्ध हुए, अपने ही अन्दर राजे जा।4।।

बारह सौ कर उत्तुंग प्रभो, चालीस लक्ष पूर्वायु हो।
तनु कनकद्युति सौन्दर्यखान, फिर भी तनु विरहित सुन्दर हो।।
प्रभु अनुपम अतुल अलौकिक हो, चकवा लाञ्छन से जाने सब।
अज्ञानमती हर 'ज्ञानमती', कीजे मम शिवपद पाने तक।।5।।

श्री सुमतिजिन स्तोत्र

(छंद सहित)

चित्रपदा छन्दः—(8 अक्षरी)

यस्य मुखाम्बुजजाता, दिव्यसुधारसवाणी।
चित्तकुमत्यपहर्त्री, तं सुमतिं प्रणमामि।।1।।

विद्युन्माला छन्दः—(8 अक्षरी)

ज्ञानज्योतिः पूर्णानंदं, शुद्धात्मानं ध्यायं ध्यायं।
कर्मारातीन् शीघ्रं हत्वा, सिद्धिं लेभे तं वंदेऽहं।।2।।

माणवक छन्दः—(8 अक्षरी)

वीतरुजं वीतशुचं, साम्यरसैः पूर्णभृतं।
स्वात्मगतां, सौख्यसुधां, यः स्वदते तं नमतु।।3।।

हंसरुतं छन्दः—(8 अक्षरी)

आत्मा सिद्धसदृशोऽयं, चिच्चैतन्यविभवोऽयं।
ज्ञानज्योतिरतुलोऽयं, युष्माभिर्निगदितोऽयं।।4।।

नागरक छन्दः—(8 अक्षरी)

पापहरं शिवंकरं, पादसरोरुहं तव।
स्वात्मतमोहरं विधो! त्वां निदधे मनोगृहे।।5।।

नाराचिका छन्दः—(8 अक्षरी)

भव्याब्जिनी विभाकरः, योगीन्द्रचित्तगोचरः।
पापारिपुंजदाहकः, स्थेयात् सदा स मे हृदि।।6।।

समानिका छन्दः—(8 अक्षरी)

साधुवृन्दवंदितोऽसि, सेन्द्रवृन्दसेवितोऽसि।
कर्मपुंजखंडितोऽसि त्वत्समीपमागतोऽस्मि।।7।।

प्रमाणिका छन्दः—(8 अक्षरी)

अनंतसौख्यसागरः, समस्तविश्वभास्करः।
गुणाम्बुराशिचंद्रमाः पुनीहि मे मनः सदा।।8।।

वितान छन्दः—(8 अक्षरी)

सुरासुरैः पूज्यपादः, मुनीश्वरैर्वेष्टितस्त्वं।
गुणोत्करैः प्रातिहार्यैः, विभूषितो ज्ञानसूर्यः।।9।।

आर्यागीति छन्दः – (मात्राछंद)

साकेतायां जनको, मेघरथो मंगला सुमंगलजननी।
वृषभान्वयेऽवतीर्णो, गर्भे श्रावणसित-द्वितीयायां।।10।।
चैत्रसितैकादश्यां, जन्मोत्सवमाप देववृन्दैर्मेरौ।
वैशाखशुक्लनवमी-तिथौ प्रभुर्दीक्षितो महर्द्धया युक्तः।।11।।
चैत्रसितैकादश्यां, केवलसाम्राज्यमाप भुवने व्यहरत्।
तस्यामेव तिथौ स्यात्, सम्मेदगिरेः, सुमतिजिनो मुक्तिपतिः।।12।।

अनुष्टुप् छन्दः –

शून्यषड्वार्धिपूर्वायुः, शरास-त्रिंशतोच्छ्रितः।
संतप्ततपनीयाभः, कोकचिन्हः पुनातु मे।।13।।

श्री अनन्तनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीमाननंतनाथस्त्वं, अंतकांतकविश्रुतः।
श्रीमदनंतनाथं त्वां, नमन्ति नृसुरासुराः।।1।।

श्रीमतानंतनाथेना-नंतजीवदया कृता।
श्रीमतेऽनंतनाथाय, मम नमोऽस्त्वनंतशः।।2।।

श्रीमतोऽनंतनाथात् हि, तीर्थमनंतसौख्यकृत्।
श्रीमतोऽनंतनाथस्य, भक्तिर्भवान्तकारिणी।।3।।

श्रीमदनंतनाथे हि, नतिं भक्तिं सदा दधे।
श्रीमन्ननंतनाथ! त्वं, देह्यनन्तचतुष्टयम्।।4।।

-स्वास्थ्य मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं आरोग्यलाभं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री अनंतजिन स्तुति

(हिन्दी काव्य)

हे नाथ! अनंत गुणाकर तुम, साकेतपुरी में जन्म लिया।
जयश्यामा माँ सिंहसेन पिता, ने कीर्तिध्वजा को लहराया।।
कार्तिक वदि एकम गर्भ बसे, वदि ज्येष्ठ दुवादशि जन्मे थे।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, तप तपते वन वन घूमे थे।।1।।
चैत्री मावस में ज्ञानोत्सव, इस ही तिथि में प्रभु सिद्ध हुए।
दो सौ कर देह कनक कांति, प्रभु तीस लाख वत्सर[1] थिति[2] है।।
सेही लांछनयुत अंतकहर! हे देव अनंत! तुम्हें प्रणमूँ।
यह सब व्यवहार स्तुति भगवन्! निश्चय से गुण-गण को हि नमूँ।।2।।
यद्यपि ये कर्म अनादी से, मेरे संग बँधते आये हैं।
फिर भी अणुमात्र नहीं मुझमें, परिवर्तन करने पाये हैं।।
मैं सब प्रदेश में ज्ञानमयी, जड़कर्मों से क्या नाता है?
मैं हूँ चैतन्य अनंत गुणी, जड़ ही जड़ के निर्माता हैं।।3।।
यह निश्चयनय जब निश्चय से, ध्यानस्थ अवस्था पाता है।
तब कर्मों का कर्त्ता भोक्ता, नहिं होता बंध नशाता है।।
भगवन् ! तव चरण कमल सेवा, करते-करते यह फल पाऊँ।
अनुपम अनंत गुण के सागर, 'कैवल्यज्ञानमति' पा जाऊँ।।4।।

श्री अनंतजिन स्तोत्र

(छंद सहित)

जलोद्धतगतिः छन्दः – (12 अक्षरी)

निजात्मसमतारसैर्गुणनिधिं।
भृतं सुखसुधाकरं शिवमयं।।
उपैमि तव भक्तितो जिनप! त्वां!।
अनन्तजिन! ते नमोऽस्तु सततं।।1।।

---

1. वर्ष। 2. आयु।

प्रियंवदा छन्दः – (12 अक्षरी)

त्रिविधकर्ममलदोषनाशकृत्। त्रिभुवनेऽग्रशिखरे विराजते।
त्रिभुवनाधिप! सदा पुनीहि मां! सहजमात्मजसुखं प्रदेहि मे।।2।।

ललिता छन्दः – (12 अक्षरी)

यः सिंहसेननृपजः सुकार्तिके। गर्भेऽसिते प्रथमवासरे त्वितः।।
तत्र त्रिबोधयुत एव पुण्यवान्! तस्य प्रभाववशतः प्रसूः बभौ।।3।।

क्षमा छन्दः – (13 अक्षरी)

जिनजनिमसिता ज्येष्ठजा द्वादशी।
त्रिदशपतिनुतां प्राप्तवत्यर्थिनां।।
अतुलविभवदा-तत्तिथावंतहृत्।
व्रतगुणनिधिभुक् दीक्षितोऽभूज्जिनः।।4।।

प्रहर्षिणी छन्दः –

चैत्रस्यासित इति तीर्थकर्तुरेकं।
कैवल्यं विलसितमंतिमे दिने वै।।
संप्राप्तः स्वशिवपदं स तत्तिथौ च।
त्वद्भक्तेः फलमिदमेव मेऽपि भूयात्।।5।।

अनुष्टुप् छन्दः –

त्रिंशल्लक्षसमात्मायुः पंचाशच्चापसत्तनुः।
कनत्कनकसंकाशः त्वमंतकांतकं गतः।।6।।
अनंतगुणराशिस्त्वं, सेधालाञ्छनलाञ्छितः।
देहि मेऽनंतधीसौख्यं, [1]जयश्यामात्मज! प्रभो!।।7।।

-सरस्वती मंत्र-

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि! भगवति! सरस्वति! ह्रीं नमः।

1. उत्तरपुराण में जयश्यामा नाम है। अन्यत्र 'लक्ष्मीमती' नाम आया है।

श्री धर्मनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

तीर्थकृद्धर्मनाथस्त्वं, धर्मसृष्टेर्विधायकः।
तीर्थकृद्धर्मनाथं त्वां, नमामि धर्मवृद्धये।।1।।

तीर्थकृद्धर्मनाथेन, दयाधर्मो निरूपितः।
तीर्थकृद्धर्मनाथाय, नमः कुर्वन्ति साधवः।।2।।

तीर्थकृद्धर्मनाथाद् हि, जातं तीर्थ-मनुत्तरं।
तीर्थकृद्धर्मनाथस्य, भाक्तिकाः त्रिदशाधिपाः।।3।।

तीर्थकृद्धर्मनाथे हि, धर्माः सर्वे सदा स्थिताः।
तीर्थेश! धर्मनाथ! त्वं, संसारात् मां समुद्धर।।4।।

श्री धर्मजिन स्तुति

(हिन्दी काव्य)

हे धर्मधुरन्धर धर्मनाथ! धर्मामृतदायी मेघ तुम्हीं।
रत्नों की वर्षा होने से, वह रत्नपुरी थी रत्नमयी।।
यह सुतवन्ती सुप्रभावती, पितु भानुराज महिमाशाली।
वैसाख सुदी तेरस के दिन, गर्भागम उत्सव था भारी।।1।।

तिथि माघ सुदी तेरस शुभ थी, इन्द्रों ने जन्म न्हवन कीना।
उस ही तिथि में प्रभु दीक्षा ली, निज पर को पृथक्-पृथक् कीना।।
पौषी पूर्णा को ज्ञान पूर्ण, हो गया उजाला त्रिभुवन में।
शुभ ज्येष्ठ सुदी चौथी के प्रभु, शिवपद को प्राप्त किया क्षण में।।2।।

इक सौ अस्सी कर देह प्रभु! दस लाख वर्ष थिति[1] कनक कांति।
है वज्र चिह्न प्रभु कर्म शैल, को चूर किया तुम वज्र भांति।।

---

1. आयु।

हे धर्मतीर्थ के तीर्थंकर ! तुमने यम को चकचूर किया।
मैंने भी शरणा ले तेरी, अगणित दुःखों को दूर किया।।3।।
मैं मिथ्या अविरति क्रोध–मान, माया लोभों से भिन्न सही।
ये सब औपाधिक भाव कहे, मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी।।
मैं तुमको वंदन कर करके, बस तुम जैसा ही बन जाऊँ।
प्रभु ऐसा ही वर दो मुझको, मैं स्वयं स्वयंभू बन जाऊँ।।4।।

श्री चन्द्रप्रभ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीचन्द्रप्रभदेवस्त्वं, चंद्रकांतिसमप्रभः।
श्रीचन्द्रप्रभदेवं त्वां, नमन्ति स्वसुखाप्तये।।1।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवेन, मोहध्वांतमपाकृतं।
श्रीचन्द्रप्रभदेवाय, नमः स्वात्मगुणाप्तये।।2।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवात् हि, ज्ञानदीधितयः स्फुटाः।
श्रीचन्द्रप्रभदेवस्य, भासंते भाक्तिकाः भुवि।।3।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवेऽहं, दधे नित्यं स्वमानसं।
श्रीचन्द्रप्रभदेव! त्वं, मह्यं देहि स्वसंपदं।।4।।

श्री चन्द्रप्रभजिन स्तुति

(हिन्दी काव्य)

भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहिं पाया हूँ।
प्रभु तुम सब दुःख के ज्ञाता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
सुरपति गणपति नरपति नमते, तव गुणमणि की बहुभक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिये।।1।।

काशी में चन्द्रपुरी सुन्दर, रत्नों की वृष्टि खूब हुई।
भू धन्य हुई जन धन्य हुए, पितु-मात के हर्ष की वृद्धि हुई।।
राका शशांक सम कांत तनु, धवलोज्ज्वल कांति यशोधारी।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, औ कल्पतरू भी सुखकारी।।2।।

तिथि चैत्रवदी पंचमी कही, औ पौष वदी ग्यारस सुखदा।
फिर पौष वदी ग्यारस उत्तम, औ फाल्गुन वदि सप्तमी शुभा।।
फाल्गुन सुदि सप्तमि ये तिथियाँ, क्रम से पाँचों कल्याणक की।
चन्द्रप्रभ! पंचकल्याणकपति! मुझको दें पंचम सिद्धगती।।3।।

जिस वन में ध्यान धरा प्रभु ने, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कमल खिले लहिए।।
सब जात विरोधी गरुड़ सर्प, मृग सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिन पद चूम रहे।।4।।

महासेन पिता भी पूज्य हुए, जननी लक्ष्मणा पवित्र हुयी।
दशलाख वर्ष पुर्वायू थी, छह सौ करतुंग शरीर सही।।
शशि लांछनयुत भ्रम तम हरते, यश ज्योत्स्ना फैली जग में।
मुझको भी निज संपद देवो, मैं नमूँ सदा तव चरणों में।।5।।

जिनमंदिर में भगवान के अभिषेक का एवं घंटा लगाने का पुण्य

घंटाहिं घंटसद्दाउलेसु पवरच्छराणमज्झम्मि।
संकीडइ सुरसंघायसेविओ वरविमाणेसु।।489।।

अर्थ–जिनमन्दिर में घंटा समर्पण करने वाला पुरुष घंटाओं के शब्दों से आकुल अर्थात् व्याप्त, श्रेष्ठ विमानों में सुर समूह से सेवित होकर प्रवर-अप्सराओं के मध्य में क्रीड़ा करते हैं।।489।। (वसुनंदि श्रावकाचार)

अहिसेयफलेण णरो अहिसिंचिज्जइ सुदंसणस्सुवरिं।
खीरोयजलेण सुरिंदप्पमुहदेवेहिं भत्तीए।।491।।

अर्थ–जिनभगवान के अभिषेक करने के फल से मनुष्य सुदर्शन मेरू के उपर क्षीरसागर के जल से सुरेन्द्र प्रमुख देवो के द्वारा भक्ति के साथ अभिषिक्त किया जाता है।।491।।

चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम्

-उपजाति छंद-

श्रीनाभिसूनुर्भुवनैकसूर्यः, श्रीधर्मतीर्थस्य प्रवर्तको यः।
भव्यैकबंधुर्जगदेकनाथः, तमादिदेवं प्रणमामि नित्यं।।1।।

विजित्य सर्वं किल कर्मशत्रून्, अजेयशक्ति-र्ह्यजितो जिनेशः।
सौख्याकरोऽनंतगुणाकरो यः, द्वितीयतीर्थेशमहं स्तुवे तं।।2।।

पुनातु मे संभवनाथ! चित्तं, पुनः पुनः संसृतिदुःखतप्तं।
संस्तौमि नित्यं शरणं प्रपद्ये, भवाम्बुधेः पारगतं महेशम्।।3।।

गुणैरनन्तैरभिनंदनोऽसा-वगात् समृद्धिं सहसा त्रिलोक्यां।
ददाति सौख्यं किल भाक्तिकानां, तं देवदेवं प्रणमामि भक्त्या।।4।।

नयप्रमाणैः सकलं सुतत्त्वं, प्रकाशयन् यो जगतामुदेति।
सः सर्वलोकैकविभास्वराख्यम्, वंदे सुमत्यै सुमतिं जिनं तं।।5।।

नक्षत्रवृंदैः समुपास्यमानः, विभ्राजते पूर्णकलः शशीव।
धर्मामृतैः सिंचति भव्यजीवान्, पद्मालयं पद्मजिनं स्तुवे तं।।6।।

गणाधिपैः साधुनरामराद्यैः, रराज यो दिव्यसभासु मध्ये।
भव्याब्जसूर्यो गतरागमोहः, वंदे सुपार्श्वं तं देवदेवम्।।7।।

चंद्रप्रभो वागमृतांशुभिर्यो, जनान् प्रपुष्यन्नकलंकयुक्तः।
न चापि दोषाकरतां प्रयाति, सदा स्तुवे तं भवतापशून्यं।।8।।

पुष्यंति भव्यास्तव नाममंत्रैः, तुष्यंति नित्यं गुणकीर्तनेन।
पुष्यान्मनो मे जिनपुष्पदंतः, त्वां भक्तिपुष्पांजलिनार्चयामि।।9।।

संसारदावाग्निषु दग्धजीवाः, शीतीभवन्त्याश्रयतस्तवैव।
श्रीशीतलेशो भुवनत्रयेशः, शीतं मनो मे कुरु वाक्सुधाभिः।।10।।

श्रेयान् जिनः श्रेयसि मार्गलग्नान्, शरीरिणो रक्षतु विघ्नवृंदात्।
श्रेयस्करो मे भवतात् समंतात्, श्रियं विदध्यात् शिवसौख्यकर्त्री।।11।।

देवेंद्रवृंदैर्नरनाथमुख्यैः, मुनीश्वरैः सर्वगणाधिपैश्च।
सदा प्रपूज्यो भुवनेषु पूज्यः त्वां वासुपूज्यं प्रणमामि भक्त्या।।12।।

मलैर्विमुक्तो विमलो जिनस्त्वं, त्वदंघ्रिसेवा विमलीकरोति।
मनः पुनीते किल भाक्तिकानाम्, नमामि नित्यं विमलं विशुद्धयै।।13।।

अनंत! दृग्ज्ञानसुवीर्यसौख्यं, अनंततां याति तव प्रसादात्।
अनंतदोषान् जिन! मे लुनीहि, नमाम्यनंतं हृदि धारये त्वां।।14।।

श्रीधर्मचक्रं भुवि चालयन् त्वम्, श्रीधर्मतीर्थंकरतां गतस्त्वम्।
क्षमादिधर्मान् किल लब्धयेऽहं, श्रीधर्मनाथं शिरसा नमामि।।15।।

शांतिं भवेत्सर्वजगज्जनानां, शांतिं भवेत्सर्वगणाय नित्यं।
शांतं मनो मे भवसर्वतापात्, श्रीशांतिनाथं प्रणमामि नित्यं।।16।।

संसारवार्धौ विनिमग्नजंतून्, उद्धृत्य यो मोक्षपदे धरन् हि।
कृपापरस्तं प्रभुकुंथुनाथं, नमामि भक्त्या परया मुदा च।।17।।

स्तुत्या न तुष्यन् प्रददाति सौख्यं, प्रद्वेषतो दुःखमपि प्रदत्ते।
तथाप्यरस्त्वं किल वीतरागः, ह्यचिंत्यमाहात्म्यमतःस्तुवे त्वां।।18।।

यः कर्ममल्लं प्रतिमल्ल एव, श्रीमल्लिनाथो भुवनैकनाथः।
संसारवल्लिं च लुनीहि मे त्वं, मनः प्रसत्तिं कुरु मे समंतात्।।19।।

महाव्रतं मुक्तिपथं दधानः, प्राप्तः प्रमुक्तिं मुनिसुव्रतस्त्वं।
बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः, भूयात् सदा मे हि नमोऽस्तु तुभ्यं।।20।।

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवंद्यं, श्रीदेवदेवं नमिनामधेयं।
भक्त्या प्रवंदे त्रयशुद्धितस्त्वां, मनःसमाधिं, विदधातुदेव।।21।।

जंतून् विलोक्याशु दयां चकार, राजीमतीं, सर्वपरिग्रहं च।
त्यक्त्वा गृहीत् धर्मधुरं सुदीक्षां, तं नेमिनाथं शिरसा नमामि।।22।।

भवे भवे दैत्यकृतोपसर्गं, सोढ्वा क्षमावान् जिनराजराजः।
महामनाः पार्श्वजिनः स्तुवे त्वां, सर्वंसहां मे कुरु नाथ! शक्तिं।।23।।

श्रियाभिवृद्धः खलु वर्धमानः, श्रीमुक्तिलक्ष्म्या भुवनाधिनाथः।
सर्वार्थसिद्धया कृतकृत्यसिद्धः, त्वां नौमि भो वीर! निजात्मसिद्धयै।।24।।

अनुष्टुप् छंद- चतुर्विंशतितीर्थेशां, स्तुतिं कृत्वा सुभक्तितः।
याचे स्वात्मश्रियं नित्या-मर्हज्ज्ञानमतिं त्वरं।।25।।

श्री ऋषभदेव स्तुतिः

(दशावतारगर्भित)

-अनुष्टुप् छंद-

ऋषभेशं नमस्कृत्य, तस्यानंतगुणेष्वपि।
स्वल्पगुणान् समादाय, भक्त्या मोदात् स्तवीम्यहम्।।1।।

महाबलं नुमो नित्य-मतुल्यबलधारिणम्।
जन्मातिशयसंयुक्त-मादिनाथं शिवाप्तये।।2।।

अतीव सुंदरं रूपं, धारयन् वृषभेश्वरः।
ललितांगो जयत्वत्र, स्वात्मसौंदर्यवानपि।।3।।

वज्रवत्स्थिरजंघाय, श्रेष्ठसंहननाय ते।
नमोऽस्तु वज्रजंघाय, ऋषभाय स्वशक्तये।।4।।

अर्यते गुणवद्भिर्यो-ऽसावार्यः ऋषभो जिनः।
पूज्यस्तस्मै नमो नित्यं, नानर्द्धिगुणप्राप्तये।।5।।

अन्तर्लक्ष्मीधरोऽनन्त-गुणी बाह्यविभूतिमान्।
समवादिसृतेर्भर्ता, श्रीधराय नमोऽस्तु ते।।6।।

तीर्थकृत्प्रकृतिः सुष्ठु, तां बद्ध्वा तीर्थनायकः।
युगादावादिब्रह्मा यस्तस्मै सुविधये नमः।।7।।

अच्युतो मरणातीतो, न च्युतो नहि जायते।
तस्येन्द्रो हि 'जिनेन्द्रः' स्यात्, तस्मै नित्यं नमोऽस्तु मे।।8।।

समचतुष्कसंस्थानं, दधानो वज्रनाभिभाक्।
तस्मै नमोऽस्तु मे नित्यं, वज्रनाभिजिनेशिने।।9।।

संपूर्णार्थस्य संसिद्धि-र्जाता यस्य जिनेशिनः।
सर्वार्थसिद्धिजं देवं, तं स्तुमः स्वार्थसिद्धये।।10।।

पंचकल्याणकं वंदे, तीर्थेशां सर्वसौख्यदम्।
केवलमेककल्याणं, याचेऽहं देव! देहि मे।।11।।

गर्भवासमहद्दुःखाद्, भीत्याहं तद्विमुक्तये।
गर्भकल्याणकं स्तौमि, तीर्थेशामपुनर्भुवाम्।।12।।

तीर्थकर्तृजिनेन्द्राणां, जन्मकल्याणकं नुवे।
पुनर्जन्म न मे भूयात्, याञ्चा एकैव त्वत्प्रभोः।।13।।

विश्वस्रष्ट्रे जगद्भर्त्रे, ऋषभाय नमो नमः।
सर्वा विद्याकला यस्मा-दाविर्भूता महीतले।। 14।।

नमामि पुरुदेवस्य, दीक्षाकल्याणकं मुदा।
यतो दीक्षाफलं लप्स्ये, शीघ्रं भक्तिप्रसादतः।।15।।

युगादौ मुनिचर्यां यः, चांद्रीचर्यां प्रदर्शयन्।
प्रथमाहारलाभं सः, समाप्नोत् हस्तिनापुरे।।16।।

तं ऋषभेश्वरं नौमि, तृतीयामक्षयामपि।
हस्तिनागपुरं तीर्थं, स्तवीमि भक्तितोऽधुना।।17।।

केवलज्ञानकल्याणं, प्राप्नोत् यो घातिकर्मभित्।
केवलज्ञानप्राप्त्यर्थं, केवलं ते नमो नमः।।18।।

प्रभोः ऋषभदेवस्य, दिव्यध्वनिं नमाम्यहम्।
यत्प्रसादेन सोऽद्यापि, मोक्षमार्गः प्रवर्तते।।19।।

सर्वकर्मविनिर्मुक्तः प्राप्नोत् सिद्धालयं प्रभुः।
तल्लोकाग्र्यगमनार्थं, तस्मै मेऽनन्तशो नमः।।20।।

युगादौ दर्शिता मोक्ष-मार्गस्य या परंपरा।
साद्यावध्यपि लोकेऽस्मिन्, वर्तते तां श्रयाम्यहम्।।21।।

भरतं चक्रिणं नौमि, स्वात्मानं भावयन्नसौ।
दीक्षामादाय कैवल्यं, क्षणे लेभे जिनोऽभवत्।।22।।

श्रीवृषभादिवीरान्ता-श्चतुर्विंशतयो जिनाः।
सर्वसौख्यप्रदातारः, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।23।।

शासनाधिपतिं देवं, महावीरं नमाम्यहम्।
अहिंसा शासनं यस्य, सार्वमद्यापि वर्तते।।24।।

प्रथमं तीर्थकर्तारं, वंदे भक्त्याप्यनन्तशः।
युष्मद् भक्तिः सदा मह्यं, दद्यात् "ज्ञानमतीं" श्रियम्।।25।।

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

-अनुष्टुप् छंद-

निर्वाणः सागरो देवो, महासाधुर्जिनेश्वरः।
विमलप्रभश्रीधरौ, श्रीसुदत्तोऽमलप्रभः।।1।।

उद्धरोऽङ्गिरसन्मती, श्रीसिन्धुः कुसुमाञ्जलिः।
शिवगणाख्य उत्साहो, ज्ञानेशः परमेश्वरः।।2।।

विमलेशो यशोधरः, कृष्णो ज्ञानमतिर्जिनः।
शुद्धमतिश्च श्रीभद्रोऽतिक्रान्तः शांतनामभाक्।।3।।

वृषभोऽजितनामा च, संभवश्चाभिनंदनः।
सुमतिश्च पद्मप्रभः, सुपार्श्वश्चन्द्रतीर्थकृत्।।4।।

सुविधिः शीतलो श्रेयान्, वासुपूज्यः सुरैर्नुतः।
विमलोऽनंततीर्थेशो, धर्मः शांतिजिनेश्वरः।।5।।

कुंथुनाथोऽरनाथश्च, मल्लिश्च मुनिसुव्रतः।
नमिर्नेमिर्जिनः पार्श्वो, वर्धमानः पुनातु मां।।6।।

महापद्मः सुरदेवः, सुपार्श्वश्च स्वयंप्रभः।
सर्वात्मभूताख्यो देव-पुत्रश्च कुलपुत्रकः।।7।।

उदंकः प्रौष्ठिलो नाथो, जयकीर्त्यभिधो जिनः।
मुनिसुव्रतोऽरनाथो, निष्पापः निष्कषायकः।।8।।

विपुलो निर्मलश्चित्र-गुप्तः समाधिगुप्तकः।
स्वयंभूरनिवर्तको, जयश्च विमलो जिनः।।9।।

देवपालोऽनंतवीर्यो, जंबूद्वीपस्य भारते।
संति मे पांतु तीर्थेशाः, भूतसंप्रतिभाविनः।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र की त्रैकालिक तीर्थंकर स्तुति

(हिन्दी काव्य)

-शंभु छंद-

श्रीमन् निर्वाणप्रभू सागर, औ महासाधु विमलप्रभु हैं।
श्रीधर सुदत्त औ अमलप्रभू, उद्धर अंगिर सन्मति प्रभु हैं।।
सिंधूजिन कुसुमांजलि शिवगण, उत्साह तथा ज्ञानेश्वर हैं।
परमेश्वर विमलेश्वर यशधर, जिनकृष्ण ज्ञानमति जिनवर हैं।।1।।

प्रभु शुद्धमति श्री भद्रनाथ, अतिक्रांत शांत प्रभु तीर्थंकर।
इस भरतक्षेत्र में भूतकाल के, चौबिस जिनवर मंगलकर।।
श्री वृषभ अजित औ संभवजिन, अभिनंदन सुमति पदमप्रभ हैं।
जिनवर सुपार्श्व श्री चंद्रप्रभू, सुविधि शीतल श्रेयान जिन हैं।।2।।

श्रीवासुपूज्य औ विमलदेव, श्रीमन् अनंत प्रभु धर्मनाथ।
शांतीश्वर कुंथु अरह मल्ली, मुनिसुव्रत नमि और नेमिनाथ।।
श्री पार्श्वनाथ जिन वर्धमान, ये वर्तमान चौबीस प्रभो।
संप्रति जिनका शासन उत्तम, जयशील रहें वे वीर प्रभो।।3।।

श्री महापद्म सुरदेव तथा, सूपार्श्व स्वयंप्रभ जिनवर हैं।
सर्वात्मभूत औ देवपुत्र, कुलपुत्र उदंक सु प्रौष्ठिल हैं।।
जयकीर्ति मुनिसुव्रत अरजिन, निष्पाप तथा निष्कषाय हैं।
श्रीविपुल सु निर्मल चित्रगुप्त, श्रीमन् समाधिगुप्ताख्य कहे।।4।।

जिनराज स्वयंभू अनिवर्तक, जयनाथ विमल औ देवपाल।
जिनदेव अनंतवीर्य होंगे, ये भावी जिनवर जगत्पाल।।
इस जंबूद्वीप सुसंबंधी, भरतार्य खंड के तीर्थंकर।
ये भूतभवद् भावी उनको, मैं नमूं सदा वे मंगलकर।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थत्रैकालिकचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

तीन चौबीसी मंत्र

(1)

जंबूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भूतकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय नमः। 2. ॐ ह्रीं श्री सागरजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री महासाधुजिनेन्द्राय नमः। 4. ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभजिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री श्रीधरजिनेन्द्राय नमः। 6. ॐ ह्रीं श्री सुदत्तजिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अमलप्रभजिनेन्द्राय नमः। 8. ॐ ह्रीं श्री उद्धरजिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री अंगिरजिनेन्द्राय नमः। 10. ॐ ह्रीं श्री सन्मतिजिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री सिंधुजिनेन्द्राय नमः। 12. ॐ ह्रीं श्री कुसुमाँजलिजिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री शिवगणजिनेन्द्राय नमः। 14. ॐ ह्रीं श्री उत्साहजिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानेश्वरजिनेन्द्राय नमः। 16. ॐ ह्रीं श्री परमेश्वरजिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री विमलेश्वरजिनेन्द्राय नमः। 18. ॐ ह्रीं श्री यशोधरजिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री कृष्णजिनेन्द्राय नमः। 20. ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमतिजिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री शुद्धमतिजिनेन्द्राय नमः। 22. ॐ ह्रीं श्री भद्रजिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री अतिक्रांतजिनेन्द्राय नमः। 24. ॐ ह्रीं श्री शांतजिनेन्द्राय नमः।

(2)

जंबूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः। 2. ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय नमः। 4. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सुमतिजिनेन्द्राय नमः। 6. ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय नमः। 8. ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय नमः। 10. ॐ ह्रीं श्री शीतलजिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री श्रेयोजिनेन्द्राय नमः। 12. ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः। 14. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नमः। 16. ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय नमः। 18. ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः। 20. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमः। 22. ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः। 24. ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।

(3)

जंबूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के भविष्यत्कालीन चौबीस तीर्थंकर

1. ॐ ह्रीं श्री महापद्मजिनेन्द्राय नमः। 2. ॐ ह्रीं श्री सुरदेवजिनेन्द्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वजिनेन्द्राय नमः। 4. ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभजिनेन्द्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सर्वात्मभूतजिनेन्द्राय नमः। 6. ॐ ह्रीं श्री देवपुत्रजिनेन्द्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री कुलपुत्रजिनेन्द्राय नमः। 8. ॐ ह्रीं श्री उदंकजिनेन्द्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री प्रौष्ठिलजिनेन्द्राय नमः। 10. ॐ ह्रीं श्री जयकीर्तिजिनेन्द्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः। 12. ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री निष्पापजिनेन्द्राय नमः। 14. ॐ ह्रीं श्री निष्कषायजिनेन्द्राय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री विपुलजिनेन्द्राय नमः। 16. ॐ ह्रीं श्री निर्मलजिनेन्द्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री चित्रगुप्तजिनेन्द्राय नमः। 18. ॐ ह्रीं श्री समाधिगुप्तजिनेन्द्राय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री स्वयंभूजिनेन्द्राय नमः। 20. ॐ ह्रीं श्री अनिवर्तकजिनेन्द्राय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री जयनाथजिनेन्द्राय नमः। 22. ॐ ह्रीं श्री विमलजिनेन्द्राय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री देवपालजिनेन्द्राय नमः। 24. ॐ ह्रीं श्री अनंतवीर्यजिनेन्द्राय नमः।

मंदिर में छत्र, चंवर, ध्वजा चढ़ाने का पुण्य

छत्तेहिं एयछत्तं भुंजइ पुह्वी सवत्तपरिहीणो।
चामरदाणेण तहा विज्जिज्जइ चमरणिवहेहिं।।490।।
विजयपडाएहिं णरो संगाममुहेसु विजइओ होइ।
छक्खंडविजयणाहो णिप्पडिवक्खो जसस्सी य।।492।।

अर्थ—छत्र-प्रदान करने से मनुष्य, शत्रुरहित होकर पृथिवी को एक छत्र भोगता है। तथा चमरों के दान से चमरों के समूहों द्वारा परिवीजित किया जाता है, अर्थात् उसके ऊपर चमर ढोरे जाते हैं।।490।।

अर्थ—जिन-मंदिर में विजय पताकाओं के देने से मनुष्य सुदर्शन मेरू के ऊपर क्षीरसागर के जल से सुरेन्द्र प्रमुख देवों के द्वारा भक्ति के साथ अभिषिक्त किया जाता है।।492।। (वसुनंदि श्रावकाचार)

समवसरण स्तुति

–दोहा–

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।

–शंभुछंद–

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्त्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी, प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इंद्रनीलमणि रचित गोल, आकार बना गुणमणिमाली।।
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े, चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते[1], जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा, उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से, मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण के चार कोट, अरु पाँच वेदिकायें ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि, फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।5।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है, भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से, पाँच पाँच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ, दो दोय नाट्यशालायें हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं, सुर भवनवासि कन्यायें हैं।।6।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची, गोपुरद्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी, ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।

---

1. हरिवंशपुराण।

फिर आगे खाई स्वच्छ नीर से, भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत, हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।

फिर दूजी वेदी के आगे, तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले, जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुरद्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूपघटों युत, में प्रवेश करती जनता।।8।।

आगे उद्यान भूमि चौथी, चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तपर्ण, चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा मे एक एक, तरु चैत्यवृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिनप्रतिमा प्रातिहार्ययुत चार चार मणिमय दीखें।।9।।

इसके आगे वेदी सुन्दर, फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा, गोपुरद्वारों से युत शोभे।।
फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी, दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं, सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।

चौथी वेदी के बाद भवन-भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव-नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा, मरकतमणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी, बारह कोठों से जनमनहर।।11।।

फिर पंचम वेदी के आगे, त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर, धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज, नवविधि मंगलद्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर, जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो वंदे ध्यावें गुण गावें, वे ज्ञानमती कैवल्य करें।।13।।

दोहा– चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जग विष्णु।
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु।।14।।

प्रथम पंचमहापुरुष स्तुतिः

-अनुष्टुप् छंदः-

श्रीमान् ऋषभदेवस्त्वं, प्रथमस्तीर्थकृन्मतः।
सर्वा विद्याकला युष्मद्, नमस्तुभ्यं शिवाप्तये।।1।।

प्रथमश्चक्रवर्ती यो, भरतेशो भुवि श्रुतः।
नमस्तस्मै सुभक्त्याहं, यस्य नाम्नेह भारतम्।।2।।

प्रथमः कामदेवो यो, बाहुबली महाबली।
वर्षैकः प्रतिमायोगी, बलर्द्धिप्राप्तये नमः।।3।।

गणीन्द्रः प्रथमो ज्ञेयः, ऋषभसेननामभाक्।
चतुर्ज्ञानर्द्धिसंपन्नो, नमस्तुभ्यं स्वसंपदे।।4।।

प्रथमो मोक्षगामी योऽ-नंतवीर्यः प्रभोः सुतः।
गुणानन्तर्द्धिसंप्राप्त्यै, ते नमोऽस्तु सदा मुदा।।5।।

पंचमहापुरूषांस्तान्, युगादौ प्रथमान् भुवि।
पंचमज्ञानमत्याप्त्यै, एषां च प्रतिमाः स्तुवे।।6।।

प्रथम पंच महापुरुष स्तुति

(हिन्दी काव्य)

जय जय आदीश्वर ऋषभदेव, इस युग के प्रथम तीर्थकर हो।
जय जय कर्मारिजयी जिनवर, तुम परमपिता परमेश्वर हो।।
जय युगस्रष्टा असि मषि आदिक, किरिया उपदेशी जनता को।
त्रय वर्ण व्यवस्था राजनीति, गृहिधर्म बताया परजा को।।1।।

निज पुत्र पुत्रियों को विद्या-अध्ययन करा निष्पन्न किया।।
भरतेश्वर को साम्राज्य सौंप, शिवपथ मुनिधर्म प्रशस्त किया।।
इक सहस वर्ष तप करके प्रभु, कैवल्यज्ञान को प्रकट किया।
अठरह कोड़ाकोड़ी सागर, के बाद मुक्ति पथ प्रकट किया।।2।।

तुम प्रथम पुत्र भरतेश प्रथम, चक्रेश्वर हो षट्खंडजयी।
जिन भक्तों में थे प्रथम तथा, अध्यात्म शिरोमणि गुणमणि ही।।
सब जन मन प्रिय थे सार्वभौम, यह भारतवर्ष सनाथ किया।
दीक्षा लेते ही क्षण भर में, निज केवलज्ञान प्रकाश किया।।3।।

हे ऋषभदेव सुत बाहुबली, तुम कामदेव प्रथमे प्रगटे।
सुत थे द्वितीय पर अद्वितीय, चक्रेश्वर को भी जीत सके।।
तुमने दीक्षा ले एक वर्ष का, योग लिया ध्यानस्थ हुए।
वन लता भुजाओं तक फैली, सर्पों ने वामी बना लिये।।4।।

इक वर्ष पूर्ण होते ही तो, भरतेश्वर ने आ पूजा की।
उस ही क्षण तुम हुए निर्विकल्प, तब केवलज्ञान की प्राप्ति की।।
श्री ऋषभदेव के तृतीय पुत्र, माँ यशस्वती के नंदन हो।
तज पुरिमतालपुर नगर राज्य, मुनि बने जगत अभिनंदन हो।5।।

सब ऋद्धि समन्वित गणधर गुरु, हे ''ऋषभसेन'' तुमको वंदन।
तुम प्रथम तीर्थंकर के पहले, गणधर हम करते नित्य नमन।।
ऋषभेश्वर सुत श्री अनंतवीर्य, ये सबसे पहले मोक्ष गये।
इनके चरणों में नित्य नमूँ, इन वंदत वांछित सिद्ध भये।।6।।

युग के ये पाँच प्रथम माने, ये महापुरुष सुरवंदित हैं।
इन भक्ती स्तुति करने से, होता मुझ हृदय प्रफुल्लित है।।
मैं पंचम ज्ञानमती हेतू, पंचांग प्रणाम करूँ नित ही।
भव पंच परावर्तन छूटे, पंचमगति प्राप्ती चहूँ सही।।7।।

-दोहा-

वीर अब्द पच्चीस सौ, पैंतालिस विख्यात।
आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, स्तवन किया नतमाथ।।8।।

पढो पढ़ावो भक्ति से, मनुज जन्म हो धन्य।
पंचम चारित प्राप्त कर, पावो परमानन्द।।9।।

पंचमहापुरुष वंदना (लघु)

श्री ऋषभदेव श्री भरत बाहुबलि, ऋषभसेन व अनंतवीर्य।
ये प्रथमतीर्थकर प्रथम चक्र-वर्ति व प्रथम कामदेव शूर।।
श्री ऋषभसेन प्रथमहि गणधर व अनंतवीर्य शिव गये प्रथम।
इन प्रथम पंचयुगपुरुषों को, पंचम सुज्ञानमती हेतु नमन।।1।।

*****

श्री भरत स्वामी स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीभरतश्चक्रवर्ती, त्वं षट्खंडाधिनायकः।
श्रीभरतेश्वरं नौमि, भेदविज्ञानप्राप्तये।।1।।
भरतेश्वरेण दीक्षा-क्षणात् कैवल्य-माप्तवान्।
श्रीभरतेश्वराय मे, नमो नमोस्त्वनंतशः।।2।।
भरतात् भारतं वर्षं, पुराणेषु प्रकीर्त्यते।
भरतस्य विरक्तिस्तु, गार्हस्थ्येऽपि प्रसिद्ध्यति।।3।।
श्री भरतेश्वरे भक्तिः, सदा मे स्याद् भवे भवे।
भो! भरतेश! स्वामिन्! त्वं, भेदज्ञानं प्रयच्छ मे।।4।।

*****

श्री बाहुबलि स्वामी स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

बाहुबली चक्रजित् त्वं, जैनी दीक्षां गृहीतवान्।
बाहुबलिजिनं नौमि, स्वस्य कायबलर्द्धये।।1।।
बाहुबलि-जिनेनात्र, वर्षैकयोगमाश्रितः।
बाहुबलिजिनायास्मै, नमोऽस्तु स्वात्मसिद्धये।।2।।
बाहुबलिजिनादस्मात्, ध्यानसिद्धिः प्रजायते।
बाहुबलिजिनस्येह, लोके बिम्बानि भान्त्यपि।।3।।
बाहुबलिजिने भक्तिः, मे भूयात् शक्तिवर्धिनी।
बाहुबलिजिन! त्वं मां, पाहि संसारवार्धितः।।4।।

ऋषभदेव के श्री भरत आदि 101 मोक्ष प्राप्त पुत्रों की वंदना

ऋषभदेव के पुत्र सब, भरत आदि शत एक।
दीक्षा ले शिवपथ लिया, नमूँ नमूँ शिर टेक।।1।।

श्री भरत चक्री के 923 मोक्ष प्राप्त पुत्रों की वंदना

भरत चक्रि के विवर्द्धनादि-सुत नव सौ तेईस।
दीक्षा ले शिवपथ लिया, नमूँ नमूँ नत शीश।।1।।

इक्ष्वाकुवंशीय सिद्धपरमेष्ठी वंदना

(अविच्छिन्न परंपरागतमुक्तिपदप्राप्त 14 लाख सिद्धों की वंदना)

-शंभु छंद-

ऋषभेश्वर के इक्ष्वाकुवंश में, चौदह लाख प्रमित राजा।
निज सुत को राज्यसौंप दीक्षा, ले सिद्ध बने शिव के राजा।।
इन अविच्छिन्न सब सिद्धों को, हम मन वच तन से नमते हैं।
हम भी उनके समीप पहुँचें, बस यही याचना करते हैं।।1।।

1. ॐ ह्रीं श्री भरतेश्वरसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अर्ककीर्तिसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
3. ॐ ह्रीं श्री स्मितयशःसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
4. ॐ ह्रीं श्री बलसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री सुबलसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
6. ॐ ह्रीं श्री महाबलसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
7. ॐ ह्रीं श्री अतिबलसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
8. ॐ ह्रीं श्री अमृतबलसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
9. ॐ ह्रीं श्री सुभद्रसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
10. ॐ ह्रीं श्री सागरसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
11. ॐ ह्रीं श्री भद्रसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
12. ॐ ह्रीं श्री रवितेजःसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
13. ॐ ह्रीं श्री शशिसिद्धपरमेष्ठिने नमः।

14. ॐ ह्रीं श्री प्रभूततेजःसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
15. ॐ ह्रीं श्री तेजस्विसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
16. ॐ ह्रीं श्री तपनसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
17. ॐ ह्रीं श्री प्रतापवद्सिद्धपरमेष्ठिने नमः।
18. ॐ ह्रीं श्री अतिवीर्यसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
19. ॐ ह्रीं श्री सुवीर्यसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
20. ॐ ह्रीं श्री उदितपराक्रमसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
21. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रविक्रमसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
22. ॐ ह्रीं श्री सूर्यसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
23. ॐ ह्रीं श्री इन्द्रद्युम्नसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
24. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रजित्सिद्धपरमेष्ठिने नमः।
25. ॐ ह्रीं श्री प्रभुसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
26. ॐ ह्रीं श्री विभुसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
27. ॐ ह्रीं श्री अविध्वंससिद्धपरमेष्ठिने नमः।
28. ॐ ह्रीं श्री वीतभीसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
29. ॐ ह्रीं श्री वृषभध्वजसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
30. ॐ ह्रीं श्री गरुडांकसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
31. ॐ ह्रीं श्री मृगांकसिद्धपरमेष्ठिने नमः।
32. ॐ ह्रीं श्री युगादि-इक्ष्वाकुवंशीय-अविच्छिन्नसिद्धपदप्राप्तचतुर्दशलक्ष-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः।

ऋषभदेव-भरत-बाहुबली स्तुति

(हिन्दी काव्य)

–शंभु छंद –

जय जय आदीश्वर ऋषभदेव, पुरुदेव प्रथम तीर्थंकर हो।
जय जय कर्मारिजयी जिनवर, तुम परमपिता परमेश्वर हो।।

जय युगस्रष्टा असि मषि आदिक, किरिया उपदेशी जनता को।
त्रय वर्ण व्यवस्था राजनीति, गृहिधर्म बताया परजा को।।1।।

निज पुत्र पुत्रियों को विद्या-अध्ययन करा निष्पन्न किया।
भरतेश्वर को साम्राज्य सौंप, शिवपथ मुनिधर्म प्रशस्त किया।।
इक सहस वर्ष तप करके प्रभु, कैवल्यज्ञान को प्रकट किया।
अठरह कोड़ाकोड़ी सागर के, बाद मुक्ति पथ प्रकट किया।।2।।

तुम ऋषभ पुत्र भरतेश प्रथम, चक्रेश्वर हो षट्खंडजयी।
जिन भक्तों में थे प्रथम तथा, अध्यात्म शिरोमणि गुणमणि ही।।
सब जन मन प्रिय थे सार्वभौम, यह भारतवर्ष सनाथ किया।
दीक्षा लेते ही क्षण भर में, निज केवलज्ञान प्रकाश किया।।3।।

हे ऋषभदेव सुत बाहुबली, तुम कामदेव होकर प्रगटे।
सुत थे द्वितीय पर अद्वितीय, चक्रेश्वर को भी जीत सके।।
तुमने दीक्षा ले एक वर्ष का, योग लिया ध्यानस्थ हुए।
वन लता भुजाओं तक फैली, सर्पों ने वामी बना लिये।।4।।

इक वर्ष पूर्ण होते ही तो, भरतेश्वर ने आ पूजा की।
उस ही क्षण तुम हुए निर्विकल्प, तब केवलज्ञान की प्राप्ती की।।
कैलाशगिरी से मुक्ति वरी, ऋषभेश भरत बाहूबलि ने।
उस मुक्तिथान को मैं प्रणमूँ, मेरे मनवांछित कार्य बनें।।5।।

जय जय हे आदिनाथ स्वामिन्! जय जय भरतेश्वर मुक्तिनाथ।
जय जय योगेश्वर बाहुबली! मुझ को भी निज सम करो नाथ।।
तुम भक्ती भववारिधि नौका, जो भव्य इसे पा लेते हैं।
वे 'ज्ञानमती' कैवल्य करें, अर्हंतश्री वर लेते हैं।।6।।

–दोहा–

परम चिदंबर चित्पुरुष, चिच्चिंतामणि देव।
नमूँ नमूँ अंजलि किये, करूँ सतत तुम सेव।।7।।

त्रैलोक्य वंदनाष्टक (चैत्यवंदनाष्टक)

त्रिभुवन के जितने चैत्यालय, अकृत्रिम उनको नित वंदूँ।
भव भव के संचित पाप पुंज, उन सबको इक क्षण में खंडूँ।।
असुरों के चौंसठ लाख नागसुर, के चौरासी लाख कहे।
वायूसुर के छ्यानवे लाख, सुपरण के बहत्तर लक्ष कहें।।1।।

विद्युत् अग्नी स्तनित उदधि, दिक् द्वीपकुमार भवनवासी।
इन छह में पृथक्-पृथक् जिनगृह, छीयत्तर लक्ष सुगुण-राशी।।
सब लक्ष बहत्तर सात कोटि, ये जिनगृह भवनालय सुर के।
ये अधोलोक के जिनमंदिर, नितप्रति वंदूँ अंजलि करके।।2।।

इस मध्यलोक के पाँच मेरु, के अस्सी तीस कुलाचल के।
रजताचल के इक सौ सत्तर, अस्सी हैं वक्षाराचल के।।
गजदंत गिरी के बीस भवन, जंबू शाल्मलि के दश मानें।
इष्वाकृति नग के चार चार, मनुजोत्तर के भी भव हानें।।3।।

अंजनगिरि के चउ दधिमुख के, सोलह रतिकर के बत्तीस हैं।
नंदीश्वर द्वीप जिनालय ये, बावन अतिशय गुणमंडित हैं।।
कुंडलगिरि रूचकगिरि के भी, हैं चार चार सब मिल करके।
ये चार शतक अट्ठावन हैं, जिनमंदिर मध्यलोक भर के।।4।।

व्यंतरवासी ज्योतिष सुर के, सब संख्यातीत जिनालय हैं।
इस ऊपर ऊर्ध्वलोक में भी, वैमानिक वंदित आलय हैं।।
सौधर्म स्वर्ग में जिनमंदिर, बत्तीस लाख शाश्वत मानों।
ईशान स्वर्ग में अट्ठाइस, हैं लाख जिनालय सरधानों।।5।।

सानत्कुमार में बारह लख, माहेन्द्र स्वर्ग में आठ लक्ष।
दिव ब्रह्मयुगल में चार लाख, लांतव युग में पच्चास सहस।।
चालिस हजार दिव शुक्र युगल में, छह हजार युग शतार में।
जिननिलय सात सौ आनत औ, प्राणत आरण अच्युत दिव में।।6।।

ग्रैवेयक तीन अधो में हैं, इक सौ ग्यारह मध्यम त्रय में।
हैं इक सौ सात तथा जिनगृह, हैं निन्यानवे ऊर्ध्व त्रय में।।
नव अनुदिश में नव जिनमंदिर, पंचानुत्तर में पाँच कहें।
इन सबका वंदन करते ही, भविजन मनवांछित सिद्धि लहें।।7।।

तीनों लोकों के ये जिनगृह, सब आठ कोटि छप्पन सुलक्ष।
सत्तानवे सहस चार सौ औ, इक्यासी प्रमित कहे शाश्वत।।
नव सौ पच्चीस कोटी त्रेपन, हैं लाख सत्ताइस सहस सही।
नव सौ अड़तालीस जिनप्रतिमा, प्रति जिनगृह इक सौ आठ कहीं।।8।।

सब जिनगृह में अनुपम शाश्वत, मानस्तंभादिक रचनाएं।
वर्णन पढ़ते ही जन मन में, दर्शन की इच्छा प्रकटाएं।।
जिनबिम्ब पांचशत धनुष तुंग, उन वीतराग छवि मनहारी।
मैं केवल 'ज्ञानमती' हेतू, नित नमूँ जिनालय सुखकारी।।9।।

तीस चौबीसी स्तुति

सिद्धिं प्राप्ताश्च प्राप्स्यंति, भूता सन्तश्च भाविनः।
भरतैरावतोद्भूतास्तीर्थंकरा अवंतु मां।।1।।

जंबूद्वीपेऽत्र विख्याते, मध्यलोकस्य मध्यगे।
भरतो दक्षिणे भागे, उदीच्यैरावतो मतः।।2।।

पूर्वस्मिन् धातकीद्वीपेऽपरधात्र्यामपि त्विमौ।
भरतैरावतौ द्वौ द्वौ, दक्षिणोत्तर भागिनौ।।3।।

पूर्वार्धपुष्करेप्येवं, पश्चिमार्धे तथेदृशौ।
भरतैरावते क्षेत्रे, अपागुदग्दिशोश्च ते।।4।।

पंच भरतक्षेत्राणि, पंचैवैरावतान्यपि।
दशैषामार्यखंडेषु, षट्कालपरिवर्तनं।।5।।

चतुर्थेऽप्यागते काले चतुर्विंशतयो जिनाः।
तीर्थेश्वराः भवंतीह, धर्मतीर्थप्रवर्तकाः।।6।।

भूतकाले भवा एते, वर्तमानेऽप्यनागते।
भवंति च भविष्यंति, तेभ्यो नित्यं नमोऽस्तु मे।।7।।

एवं दशसु क्षेत्रेषु, त्रिकालापेक्षया इमे।
त्रिंशच्चतुर्विंशास्ते, तीर्थेशाः संतु मे श्रियै।।8।।

एतां स्तुतिं पठेत् यौऽसौ, सर्वकल्याणभाक् पुनः।
पंचकल्याणमप्याप्य, धर्मतीर्थाधिपो भवेत्।।7।।

अनंतानंतकालं सः, परमानंदसद्मनि।
केवलज्ञानमत्यामा, लक्ष्म्या नित्यं सुखी वसेत्।।8।।

आस्तां स्तवनमेतेषां, सप्तशतस्य विंशतेः।
नामभिरपि स्तवनात्, को नाम दुःखनामभाक्।।9।।

एवं ज्ञात्वैव सद्भक्त्या, सुत्रिंशच्चतुर्विंशतेः।
जिननामानि प्रीत्याहं, कीर्तयामि स्वसिद्धये।।10।।

श्री तीस चौबीसी नामावली स्तुति

-शंभु छंद-

सिद्धी को प्राप्त हुए होते, होवेंगे भरतैरावत में।
ये भूत भवद् भावी जिनवर, मेरे भी रक्षक हों जग में।।
इस मध्यलोक के मध्य प्रथित, वर जम्बूद्वीप प्रमुख जानो।
उसके दक्षिण में भरत तथा, उत्तर में ऐरावत मानो।।1।।

पूरब औ अपर धातकी खंड, द्वीप में दक्षिण उत्तर में।
दो भरत और दो ऐरावत, ये चार क्षेत्र होते द्वय में।।
इस पुष्करार्ध पूरब पश्चिम, दोनों के दक्षिण उत्तर में।
इक एक भरत ऐरावत से, ये चार क्षेत्र होते दो में।।2।।

ये पांच भरत औ ऐरावत, हैं पांच इन्हीं दश के मधि में।
जो आर्यखंड हैं उन सबमें, षट्काल परावर्तन सच में।।
जो चौथा काल वर्तता है, तब चौबिस तीर्थंकर होते।
ये जग में धर्मचक्रमय तीर्थ, प्रवर्तक तीर्थेश्वर होते।।3।।

ये भूतकाल में हुए तथा, होते हैं वर्तमान युग में।
होवेंगे तथा भविष्यत में उन सबको हो नमोस्तु नित मे।।
इस विध दश क्षेत्रों में त्रिकाल, संबंधी तीर्थंकर जो हैं।
ये तीसों चौबीसी जिनवर, मेरे को शिवलक्ष्मी देवें।।4।।

इस विध जो यह संस्तुति पढ़ते, वे सर्व कल्याणों को पाते।
पुनरपि पांचों कल्याण पाय, वृष तीर्थाधिप भी बन जाते।।
वे काल अनंतानंतों तक, परमानंदालय में जाके।
निज केवल 'ज्ञानमती' संपति, पा नहीं रहें नित सुख पाके।।5।।

श्री सरस्वती स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

सरस्वती जगन्माता, जिनवक्त्राम्बुजा सती।
सरस्वती-मुपासन्ते, भक्त्या सर्वे मुनीश्वराः।।1।।

सरस्वत्या भुक्तिं मुक्तिं, प्राप्नुवन्त्यपि भाक्तिकाः।
सरस्वत्यै नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्य-मनन्तशः।।2।।

सरस्वत्याः बुधाः भेद-ज्ञानमप्याप्नुवन्ति च।
सरस्वत्याः प्रसादेन, तरन्ति भवसागरम्।।3।।

सरस्वत्यां मतिं धृत्वाऽ-हर्निशं स्वात्मचिन्तनम्।
सरस्वति! प्रसीद त्वं, मामनुगृह्य पालय।।4।।

केवलज्ञान लक्ष्मी माता की वंदना

केवलज्ञानरूपा या, लक्ष्मीः हस्तांबुजांबिका।
तस्यै नमोऽस्तु मे नित्यं, ज्ञानज्योतिः प्रयच्छ मे।।1।।

श्री गौतमस्वामी स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्री गौतमः पिता लोके, इंद्रभूतिश्च नामभाक्।
श्रीगौतमं नुताः सर्वे, इन्द्राद्या भक्तिभावतः।।1।।

श्रीगौतमेन सज्ज्ञानं, प्राप्तं वीरस्य दर्शनात्।
श्रीगौतमाय मे नित्यं, नमो जन्मप्रहाणये।।2।।

श्रीगौतमात् प्रभोर्दिव्य-ध्वनिसारः सुलभ्यते।
श्रीगौतमस्य सद्भक्त्या, तरिष्यामि भवांबुधिं।।3।।

श्रीगौतमे द्विदशांगी, वाणी प्रस्फुरिता त्वरं।
श्रीगौतमगुरो! स्वामिन्!, मां त्राहि भवक्लेशतः।।4।।

*****

कुन्दकुन्द स्वामी की वन्दना

श्रीकुन्दकुन्दयोगीन्द्रं, नौमि भक्त्या विधा मुदा।
मनःकुंदप्रसूनं मे, तत्क्षणं प्रस्फुटीभवेत्।।1।।

*****

चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीशान्तिसागरः सूरिः, प्रथमाचार्य इष्यते।
श्रीशान्तिसागराचार्यं, श्रयामि वृत्तलब्धये।।1।।

श्रीशांतिसागरेणात्र, मुनिमार्गः प्रदर्शितः।
श्रीशान्तिसागरायाद्य, कोटिशो मे नमो नमः।।2।।

श्रीशान्तिसागराचार्यात्, जाता धर्मप्रभावना।
श्रीशान्तिसागरस्येह, भाक्तिका मोक्षमार्गिणः।।3।।

श्रीशान्तिसागराचार्ये, समाविष्टा गुणा यतेः।
हे शान्तिसागराचार्य! मामुद्धर भवाब्धितः।।4।।

चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

श्रीवीरसागराचार्यः, पट्टसूरिर्हि विश्रुतः।
श्रीवीरसागराचार्यं, वंदे भक्त्या पुनः पुनः।।1।।
शिष्याः सुशिक्षिताः नित्यं, वीरसागरसूरिणा।
नमोऽस्तु भक्तिभावेन, वीरसागरसूरये।।2।।
श्रीवीरसागराचार्यात्, ख्याता पट्टपरम्परा।
श्रीवीरसागरस्यापि, गांभीर्यादिगुणाः स्थिताः।।3।।
श्रीवीरसागराचार्ये, विद्वान्सोऽपि नता मुदा।
श्रीवीरसागराचार्य!, कृपां कृत्वा पुनीहि माम्।।4।।
सम्यग्ज्ञानमतीप्राप्त्यै, केवलं त्वत्पदद्वयम्।
आश्रयामि स्मरामि च, संततं भक्तिभावतः।।5।।

*****

आचार्य श्रीदेशभूषण स्तुतिः

(बसंततिलका छंद)

कारुण्यपुण्यगुणरत्न-समुद्रसूरे!।
संसार-वारिनिधिपोत! जगत्प्रपूज्य!।।
भव्याब्जभास्कर! ममाद्यगुरो! सुभक्त्या।
भो देशभूषणमुनीन्द्र! नमाम्यहं त्वां।।1।।

(अनुष्टुप्)

जन्ममृत्युभयाद् भीतां तितीर्षुं भववारिधेः।
हस्तावलंबनं दत्वा गृहकूपात् समुद्धृतः।।2।।
आगमज्ञो गभीरःसन् उपसर्गपरीषहान्!
सहिष्णुः शान्तिमूर्तिस्त्वं सुजनप्रीणनक्षमः।।3।।
स्मितास्यः क्रोधजिन्मोह मायामत्सरदूरगः।
ध्यानाध्ययनयोः सक्तो विकथाशून्यमानसः।।4।।

अनाद्यनिधनायोध्यापुर्या उद्धारको भवान्।
विंशहस्तप्रमामूर्तेः पुरुदेवस्य कारकः।।5।।
सर्वत्रभारते पद्भ्यां विहरन्ननुकंपया।
सर्वेषां हितसंशास्ता त्वं निष्कारण बांधवः।।6।।
देशस्यभूषणः श्रीमान् देशभूषणयोगिराट्।
विश्वशांति प्रकुर्वाणो भवान् विजयतां चिरं।।7।।

(पृथ्वी छंद)

अनेक भवदुःखदं विषयसौख्यविषसन्निभं।
विवेच्य पुनरत्यजश्च जिनरूपरूपोऽभवः।।
सुमुक्तिललनेच्छया सततमात्मनं ध्यायसि।
नमोऽस्तु गुरुवर्य! ते परमसौख्यसंसिद्धये।।8।।

*****

गणिनी आर्यिका श्री ब्राह्मीमातुः स्तुतिः

सम्यग्दर्शनसंशुद्धां, श्रमणीं श्रुतशालिनीं।
श्रीब्राह्मीमार्यिकां वंदे, गणिनीं गुणशालिनीं।।1।।

संसारदुःखतो भीत्वा, श्रीपुरुदेवमाश्रिता।
दीक्षां स्वीकृत्य मुक्त्यर्थं, ध्यानाध्ययनयोःरता।।2।।

रत्नत्रयपवित्रांगा, सन्महाव्रतधारिणीं।
समित्याचारसंसक्ता, मनोनिग्रहकारिणी।।3।।

पंचेन्द्रियजितावश्य – षट्क्रियादिषु तत्परा।
क्रोधाद्यरीन् तनूकर्त्री, मोहमायाविदूरगा।।4।।

पाणिपात्रपुटाहारा–मेकशाटकधारिणीं ।
कायक्लेशतपोरक्तां, ब्राह्मीं च सुंदरीं स्तुवे।।5।।

उपवासावमौदर्य–रसत्यागतपांसि या।
कर्मारातीन् कृशीकर्तुं, व्यधत्त परया मुदा।।6।।

सद्धर्मामृतसंप्रीत्या, ब्रह्मय आर्याः अपालयत्।
जगन्माता हितंकर्त्री, संस्तौमि तामहं मुदा।।7।।

परीषहमहाक्लेशा – दभीरुः कर्मसंगरे।
वीरांगनाऽप्यसौ पायात्, भवक्लेशभयाच्च मां।।8।।

वंदेऽहं संततं भक्त्या, श्रीब्राह्मीं सुंदरीमपि।
तीर्थकृत्कन्यकां धर्म–कन्यामिव जगन्नुतां।।9।।

रत्नत्रयस्य सिद्ध्यर्थं, त्वां महामातरं स्तुवे।
सम्यग्ज्ञानमतिर्मह्यं, भूयात् कैवल्यसौख्यदा।।10।।

*****

गणिनी-आर्यिका-श्री ब्राह्मी माता की वंदना

श्री ऋषभदेव के समवसरण में, ब्राह्मी-गणिनी मानी हैं।
श्री ऋषभदेव की पुत्री ये, साध्वी में प्रमुख बखानी हैं।।
रत्नत्रय गुणमणि से भूषित, ये शुभ्र वस्त्र को धारे हैं।
इनकी स्तुति वंदन भक्ती, हमको भवदधि से तारे है।।1।।

*****

आर्यिका श्री सुंदरी माता आदि की वंदना

सुंदरी आर्यिका मात आदि, त्रय लाख पचास हजार कही।
मूलोत्तर गुण से भूषित ये, इन्द्रादिक से भी पूज्य कहीं।।
इनकी भक्ती स्तुति करके, हम त्याग धर्म को भजते हैं।
संसार जलधि से तिरने को, आर्यिका मात को नमते हैं।।2।।

*****

ऋषभदेव के शासन की आर्यिकाओं की वंदना

श्री ऋषभदेव के शासन में, आर्यिका मात अगणित मानी।
उनके चरणों में नित्य नमूँ, ये संयतिका पूज्य मानी।।
इनकी स्तुति पूजा करके, हम त्याग धर्म को भजते हैं।
संसार जलधि से तिरने को, आर्यिका मात को नमते हैं।।3।।

चौबीस तीर्थंकर के समवसरण की आर्यिकाओं की वंदना

पचास लाख छप्पन सहस, दो सौ तथा पचास।
समवसरण की साध्वियां, और अन्य भी खास।।
अट्ठाइसों मूलगुण, उत्तर गुण बहुतेक।
धारें सबहीं आर्यिका, नमूँ नमूँ शिर टेक।।1।।

*****

सर्व आर्यिका वंदना

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, चतुर्थ काल से लेकर भी।
इस पंचमकाल के अंतिम तक, सर्वश्री संयतिका होंगी।।
ब्राह्मी माता से सर्वश्री, माता तक जितनी संयतिका।
जो हुईं हो रहीं होवेंगी, मैं नमूँ भक्ति भवदधि नौका।।2।।

अनाधिनिधन महामंत्र, तीर्थ आदि जो अनादि-अनंत हैं

(आज जो उपलब्ध हैं)

1. णमोकार मंत्र अनादि है।
2. चत्तारि मंगल पाठ अनादि है।
3. दो तीर्थ अनादि हैं—अयोध्या, सम्मेदशिखर।
4. मास, तिथियाँ अनादि हैं। श्रावण, भाद्रपद आदि मास, प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियाँ, कृष्ण-शुक्ल पक्ष।
5. अष्टमी-चतुर्दशीपर्व, नंदीश्वरपर्व, सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरू व रत्नत्रयपर्व व्रत अनादि हैं। देवगण भी यहीं की तिथि से मनाते हैं।
6. तीर्थंकर परंपरा अनादि है। त्रेसठ शलाकापुरुष अनादि हैं।
7. अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल परिवर्तन परंपरा अनादि अनंत हैं।
8. वर्णों का समूह-स्वर, व्यंजन एवं गणित विद्या-अनादि सिद्ध है। भगवान श्री ऋषभदेव ने ब्राम्ही -सुंदरी को पढ़ाया था - स्वर व्यंजन व गणित विद्या। **'सिद्धो वर्णसमाम्नायः'**
9. जिनमंदिर निर्माण परंपरा अनादि है एवं मूर्ति निर्माण परंपरा अनादि है।
10. श्री गौतमस्वामी की वाणी में कथित विषय अनादि हैं-चतुर्थकालीन है। चैत्यभक्ति में कथित-नवदेव आदि एवं प्रतिक्रमणपाठ में कथित-नव पदार्थ, चार प्रत्यय, बारह व्रत आदि।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जीवन दर्शन

जन्मभूमि -अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

पिता -महाराज नाभिराय **माता** -महारानी मरुदेवी

वर्ण -क्षत्रिय **वंश** -इक्ष्वाकु

देहवर्ण -तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह** -बैल

आयु -चौरासी लाख पूर्व वर्ष **अवगाहना**-दो हजार हाथ

गर्भ -आषाढ़ कृ.2 **जन्म** -चैत्र कृ.9

तप -चैत्र कृ.9

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष-प्रयाग-सिद्धार्थवन, वट वृक्ष (अक्षयवट)

प्रथम आहार -हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस द्वारा (इक्षुरस)

केवलज्ञान -फाल्गुन कृ.11 **मोक्ष** -माघ कृ.14

मोक्षस्थल -कैलाश पर्वत

समवसरण में गणधर -श्री वृषभसेन आदि 84

मुनि -चौरासी हजार **गणिनी** -आर्यिका ब्राह्मी माता

आर्यिका -तीन लाख पचास हजार **श्रावक** -तीन लाख

श्राविका -पांच लाख **जिनशासन यक्ष** -गोमुख देव

यक्षी -चक्रेश्वरी देवी

भगवान ऋषभदेव वर्तमान वीर नि.सं.2545 से 39505 वर्ष कम, सौ लाख करोड़ सागर अर्थात् एक कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष पहले मोक्ष गए हैं। इससे चौरासी लाख पूर्व वर्ष पहले जन्में हैं।

1. ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षीसहिताय श्री ऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।

दूसरे तीर्थंकर भगवान अजितनाथ का जीवन दर्शन

जन्मभूमि – अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

पिता – महाराज जितशत्रु
माता – महारानी विजया
वर्ण – क्षत्रिय
वंश – इक्ष्वाकु
देहवर्ण – तप्त स्वर्ण सदृश
चिन्ह – हाथी
आयु – बहत्तर लाख पूर्व वर्ष
अवगाहना – अट्ठारह सौ हाथ
गर्भ – ज्येष्ठ कृ. अमावस्या
जन्म – माघ शु. 10
तप – माघ शु. 9
दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष – सहेतुक वन एवं सप्तपर्ण वृक्ष
प्रथम आहार – साकेतनगरी के राजा ब्रह्म द्वारा (खीर)
केवलज्ञान – पौष शु.11
मोक्ष – चैत्र शु.5
मोक्षस्थल – सम्मेद शिखर पर्वत
समवसरण में गणधर – श्री सिंहसेन आदि 90
मुनि – एक लाख
गणिनी – आर्यिका प्रकुब्जा
आर्यिका – तीन लाख बीस हजार
श्रावक – तीन लाख
श्राविका – पांच लाख
जिनशासन यक्ष – महायक्ष देव
यक्षी – रोहिणी देवी

भगवान अजितनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2546 से 39506 वर्ष कम पचास लाख करोड़ सागर पहले मोक्ष गए हैं।

1. ॐ ह्रीं श्री अजितनाथतीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं महायक्षरोहिणीयक्षीसहिताय श्री अजितनाथतीर्थंकराय नमः।

चौथे तीर्थंकर भगवान अभिनंदननाथ का जीवन दर्शन

जन्मभूमि – अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

पिता – महाराज स्वयंवरराजा **माता** – महारानी सिद्धार्था

वर्ण – क्षत्रिय **वंश** – इक्ष्वाकु

देहवर्ण – तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह** – बंदर

आयु – पचास लाख पूर्व वर्ष **अवगाहना** – चौदह सौ हाथ

गर्भ – वैशाख शु. 6 **जन्म** – माघ शु. 12

तप – माघ शु. 12

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष – सहेतुक वन एवं असन वृक्ष

प्रथम आहार – साकेत नगरी के राजा इन्द्रदत्त द्वारा (खीर)

केवलज्ञान – पौष शु. 14 **मोक्ष** – वैशाख शु.6

मोक्षस्थल – सम्मेद शिखर पर्वत

समवसरण में गणधर – श्री वज्रनाभि आदि 103

मुनि – तीन लाख **गणिनी** – आर्यिका मेरुषेणा

आर्यिका – तीन लाख तीस हजार छह सौ

श्रावक – तीन लाख **श्राविका** – पांच लाख

जिनशासन यक्ष – यक्षेश्वर देव **यक्षी** – वज्रश्रृंखला देवी

भगवान अभिनंदननाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2545 से 39505 वर्ष कम, दस लाख करोड़ सागर पहले मोक्ष गए हैं।

1. ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथतीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री यक्षेश्वर यक्ष-वज्रश्रृंखलायक्षीसहिताय श्रीअभिनंदननाथ-तीर्थंकराय नमः।

पाँचवें तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथ का जीवन दर्शन

जन्मभूमि – अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

पिता – महाराज मेघरथ **माता** – महारानी सुमंगला देवी

वर्ण – क्षत्रिय **वंश** – इक्ष्वाकु

देहवर्ण – तप्त स्वर्ण सदृश **चिन्ह** – चकवा

आयु – चालीस लाख पूर्व वर्ष **अवगाहना** – बारह सौ हाथ

गर्भ – श्रावण शु.2 **जन्म** – चैत्र शु. 11

तप – वैशाख शु.9

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष – सहेतुक वन एवं प्रियंगुवृक्ष

प्रथम आहार – सौमनस नगर के राजा पद्म द्वारा (खीर)

केवलज्ञान – चैत्र शु.11 **मोक्ष** – चैत्र शु.11

मोक्षस्थल – सम्मेद शिखर पर्वत

समवसरण में गणधर – श्री अमर आदि 116

मुनि – तीन लाख बीस हजार **गणिनी** – आर्यिका अनंतमती

आर्यिका – तीन लाख तीस हजार **श्रावक** – तीन लाख

श्राविका – पांच लाख

जिनशासन यक्ष – तुंबुरू देव **यक्षी** – पुरुषदत्ता देवी

भगवान सुमतिनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2545 से 39505 वर्ष कम, एक लाख करोड़ सागर पहले मोक्ष गए हैं।

1. ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथतीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं तुंबरुयक्षपुरुषदत्तायक्षीसहिताय श्रीसुमतिनाथतीर्थंकराय नमः।

चौदहवें तीर्थंकर भगवान अनन्तनाथ का जीवन दर्शन

जन्मभूमि – अयोध्या (उ.प्र.)

पिता – महाराजा सिंहसेन
माता – महारानी जयश्यामा

वर्ण – क्षत्रिय
वंश – इक्ष्वाकु

देहवर्ण – तप्त स्वर्ण सदृश
चिन्ह – सेही

आयु – तीस लाख वर्ष
अवगाहना – दो सौ हाथ

गर्भ – कार्तिक कृ.1
जन्म – ज्येष्ठ कृ.12

तप – ज्येष्ठ कृ. 12

दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष – सहेतुक वन एवं पीपल वृक्ष

प्रथम आहार – साकेतपुर के राजा विशाख द्वारा (खीर)

केवलज्ञान – चैत्र कृ. अमावस
मोक्ष – चैत्र कृ. अमावस

मोक्षस्थल – सम्मेद शिखर पर्वत

समवसरण में गणधर – श्री जय आदि 50

मुनि – छ्यासठ हजार
गणिनी – आर्यिका सर्वश्री

आर्यिका – एक लाख आठ हजार
श्रावक – दो लाख

श्राविका – चार लाख
जिनशासन यक्ष – किन्नर देव

यक्षी – अनंतमती देवी

भगवान अनन्तनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2545 से सात सागर 65,86,545 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

1. ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथतीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं किन्नरयक्ष-अनंतमतीयक्षीसहिताय श्रीअनंतनाथतीर्थंकराय नमः।

अयोध्या तीर्थ की महिमा

भगवान ऋषभदेव जब गर्भ में आने को थे, महाराजा नाभिराय एवं महारानी मरुदेवी के आंगन में छह महीने पहले से ही रत्नों की वर्षा शुरू हो गई थी। सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से कुबेर प्रतिदिन माता के आंगन में साढ़े सात करोड़ रत्नों की वर्षा करता था। आषाढ़ कृ. 2 को भगवान का गर्भावतरण हुआ। इंद्रों ने असंख्य देवों के साथ अयोध्या आकर महामहोत्सव मनाया। चैत्र कृ. नवमी को भगवान का जन्म होते ही इंद्रों ने आकर असंख्य देवों-देवियों के साथ अयोध्या नगरी की तीन प्रदक्षिणा दी पुनः शिशु को ले जाकर सुमेरु पर्वत की पांडुकशिला पर जन्माभिषेक महोत्सव मनाया और ऋषभदेव नाम रखा।

युवावस्था में ऋषभदेव का विवाह यशस्वती और सुनंदा कन्याओं के साथ सम्पन्न हुआ। यशस्वती रानी ने भरत आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी पुत्री को तथा सुनंदा रानी ने बाहुबली पुत्र व सुंदरी पुत्री को जन्म दिया।

प्रभु ने पहले दोनों पुत्रियों को विद्याध्ययन कराया, जिनमें बड़ी पुत्री ब्राह्मी को अक्षर-अ-आ आदि विद्या एवं सुंदरी को 1, 2 आदि अंकविद्या पढ़ाकर विद्याओं को प्रगट किया पुनः एक सौ एक पुत्र व दोनों पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं-कलाओं में निपुण किया।

प्रभु ने कर्मभूमि के प्रारंभ में प्रजा को असि, मषि, कृषि, शिल्प, विद्या और वाणिज्य ऐसी षट्क्रियाओं का उपदेश दिया। प्रभु की आज्ञा से इन्द्र ने उस समय काशी, कुरुजांगल आदि 52 देशों की रचना एवं वाराणसी, हस्तिनापुर आदि नगरों की रचना करके प्रजा को यथास्थान बसाया था।

महापुराण आदि जैन शास्त्रों के अनुसार अयोध्या अनादिनिधन शाश्वत तीर्थ है एवं षट्काल परिवर्तन से चतुर्थकाल में जब कर्मभूमि प्रारंभ होती है तब पुनः उसी स्थान पर अयोध्या नगरी बनाई जाती है।

इस बार कर्मभूमि के प्रारंभ में भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर यहाँ जन्मे हैं। पुनः द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ, चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ, पंचम श्री सुमतिनाथ एवं चौदहवें श्री अनंतनाथ भगवान यहीं जन्मे हैं। शेष 19

तीर्थंकरों के जन्म श्रावस्ती, कौशाम्बी, वाराणसी, हस्तिनापुर आदि नगरियों में हुए हैं।

मेरा जन्म अयोध्या से बीस कोस दूर टिकैतनगर में हुआ है। यहाँ अयोध्या में हमेशा चैत्र कृ. नवमी को 'श्री ऋषभजयंती' महोत्सव पाँच दिवसीय धूमधाम से मनाया जाता रहा है।

बचपन से क्या माँ के गर्भ से ही यहाँ आगमन होता रहा है। अर्थात् जब मैं गर्भ में थी, तब भी माँ मोहिनी सपरिवार महोत्सव में आई थीं। अतः अयोध्या के प्रति अतीव श्रद्धा-भक्ति मेरे रोम-रोम में समाविष्ट है। क्षुल्लिकावस्था तक मैंने बार-बार दर्शन किए ही हैं।

सन् 1952 में गृहत्याग के पूर्व आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने कटरा मंदिर में भगवान ऋषभदेव, भरत, बाहुबली इन तीनों भगवान की पहली बार प्रतिमाएं विराजमान कराकर पंचकल्याणक कराये थे, तब मैंने माता-पिता के साथ इसमें भाग लेकर 'श्री देवी' बनने का सौभाग्य भी प्राप्त किया था।

श्री महावीर जी अतिशय तीर्थ पर सन् 1953 में चैत्र कृ. प्रतिपदा को मैंने क्षुल्लिका दीक्षा प्राप्त कर 'वीरमती' नाम पाया था। पुनः सन् 1956 में आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम शिष्य व पट्टाचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से 'वैशाख कृ. 2 को आर्यिका दीक्षा प्राप्त की थी और 'ज्ञानमती' नाम से प्रसिद्ध हुई हूँ।

सन् 1963 में मैं आर्यिका संघ लेकर सम्मेदशिखर जा रही थी, तभी अयोध्या के दर्शन पदविहार से किये हैं। उस समय भगवान ऋषभदेव की 31 फुट उत्तुंग प्रतिमा यहाँ लेटी थी व उन पर शिल्पी कार्य कर रहे थे। मन प्रसन्न हुआ था। पुनः सन् 1965 में मैं ससंघ श्रवणबेलगोला में थी, तभी अयोध्या में आचार्यश्री देशभूषण जी की प्रेरणा से उन्हीं के सान्निध्य में यहाँ पंचकल्याणक महामहोत्सव सम्पन्न हुआ था, सुनकर प्रसन्नता का पार नहीं था।

कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि विहार करते हुए मैं ससंघ अंतर्राष्ट्रीय श्री महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण महामहोत्सव के निमित्त सन् 1972 में दिल्ली आ गई थी।

श्रवणबेलगोला में जो सन् 1965 में ध्यान में जम्बूद्वीप आदि उपलब्धि, जैन भूगोल रचना का निर्माण, प्रतिष्ठा महोत्सव आदि अनेकों कार्यक्रम यहाँ

हस्तिनापुर में भगवान श्री शांतिनाथ की जन्मभूमि में सन् 1975 से सम्पन्न होते रहे हैं।

अयोध्या विकास की नई उपलब्धि –

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी-धनतेरस (धन्यत्रयोदशी) की पिछली रात्रि में मैं ध्यान में निमग्न थी कि ''भगवान ऋषभदेव ध्यान में आ गये''। दर्शन करके मन में हर्षातिरेक उमड़ पड़ा। ध्यान पूर्ण करके मैंने अयोध्या के लिए मंगल विहार का मन में निर्णय ले लिया। यह सन् 1992 की बात है।

इससे पूर्व सन् 1985 में मैं ज्वर व पीलिया आदि बीमारी से बहुत ही कमजोर हो चुकी थी अतः क्षुल्लक-प्रथम पीठाधीश मोतीसागर जी व आर्यिका चंदनामती जी तथा ब्र. रवीन्द्र कुमार जी एकदम घबड़ा गये। मेरी शारीरिक स्थिति को देखते हुए वे सहमत नहीं हो पा रहे थे।

इसके पूर्व का इतिहास यह है कि मेरी माँ मोहिनी सन् 1971 में अजमेर में आकर आचार्यश्री धर्मसागर जी से आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिका रत्नमती नाम प्राप्त कर दिल्ली, हस्तिनापुर आदि में मेरे साथ रहते हुए सन् 1985 में माघ कृ. 9 को यहाँ समाधिमरण को प्राप्त कर चुकी थीं। उन्होंने भी मुझे कई बार अयोध्या के बड़े भगवान के दर्शनों की प्रेरणा दी थी।

इन्हीं दिनों 6 दिसम्बर 1992 को 'राममंदिर व बाबरी मस्जिद' का प्रसंग छिड़ गया। ढांचा गिराये जाने पर विश्वस्तरीय चर्चा हो रही थी। तभी दिल्ली आदि के अनेक प्रतिष्ठित जनों ने मुझे अयोध्या विहार के लिए रोकने का प्रयास किया। परन्तु मेरा संकल्प दृढ़ था, मनोबल विशेष था अतः मैंने किसी की भी न मानकर फाल्गुन कृ. पंचमी, 11 फरवरी 1993 को हस्तिनापुर से अयोध्या के लिए मंगल विहार कर दिया। टिकैतनगर के प्रद्युम्नकुमार जैन ने 'संघपति' का भार संभाला। मार्ग में अहिच्छत्र तीर्थ के दर्शन कर वहाँ पर अध्यक्ष श्री प्रेमचंद जैन-मेरठ आदि महानुभावों के समक्ष मैंने **'तीस चौबीसी रचना'** बनाने की प्रेरणा दी। आगे बढ़ते हुए ज्येष्ठ कृ. 4, रविवार, दिनाँक 9 मई 1993 को मैं टिकैतनगर पहुँच गई। वहाँ का उत्साह व भक्ति अभूतपूर्व थी।

इन सभी ने आग्रह व सत्याग्रह के बल पर मेरे से टिकैतनगर चातुर्मास करने की स्वीकृति ले ली। मेरी अपनी परम्परा है कि मैं स्वीकृति में 99 प्रतिशत कहकर एक प्रतिशत की छूट रख लेती हूँ।

अतः यहाँ से आषाढ़ कृ. 4 मंगलवार, 8 जून को टिकैतनगर से विहार करके आषाढ़ कृ. 11, बुधवार, 16 जून 1993 को प्रातः अयोध्या पहुँच गईं। लगभग 9 माह से भायी गयी भावना सफल हुई। प्रभु ऋषभदेव का 'प्रथम मुखावलोकन' कर जो आनंद का अनुभव हुआ है, वह स्वयं के ही गम्य था।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आषाढ़ कृ. 12, गुरुवार, 17 जून 1993 को त्रिकाल चौबीसी मंदिर का शिलान्यास कराया।

पुनः आषाढ़ कृ. 14, शनिवार, 19 जून 1993 को टोंकों के तीर्थंकर जन्मभूमि के चरणों की वंदना के लिए निकली।

श्री ऋषभदेव की टोंक पर पहुँच कर प्रभु के चरणों की वंदना करके मेरे नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बह चली.....। आर्यिका चंदनामती, क्षुल्लक मोतीसागर, ब्र. रवीन्द्र कुमार आदि सभी अवाक रह गये और पूछते रहे बात क्या है ?

अटल संकल्प –

मैंने निर्णय ले लिया-''मुझे यहीं अयोध्या में वर्षायोग-चातुर्मास करना है।''....जो टिकैतनगर की एक प्रतिशत छूट रखी है, उसी का सदुपयोग करना है।'' बहुत कुछ घंटों बाद वापस आकर आहार लिया व निर्णय सुना दिया। अब क्या था टिकैतनगर के भक्तों का व बालक-बालिकाओं का हल्ला-गुल्ला चालू हो गया। आसपास के श्रावक व कमेटी के लोग 99 प्रतिशत सभी पक्ष में थे, मात्र एक-दो लोग मना कर रहे थे.....।

एक दो बालकों ने तो आत्मदाह की व टंकी से कूदकर मरने की धमकी देना शुरू कर दिया.....। बड़ी विकट परिस्थिति थी।

मैंने न जाने कैसे इन सभी को समझा-बुझाकर शांत किया।

मैंने कहा-तुम्हें अपनी जन्मभूमि का मोह है.....या प्रभु तीर्थंकर की जन्मभूमि उससे महान है या नहीं ? बताओ आदि.....।

मेरे पुण्य के योग से वर्षायोग यहाँ स्थापित हो गया। मंदिर निर्माण का कार्य द्रुतगति से चल रहा था। जिनप्रतिमाओं – त्रिकाल चौबीसी भगवन्तों के लिए आर्डर हो चुके थे। पंचकल्याणक की तिथि व महामस्तकाभिषेक की तिथि निश्चित हो गई थी। प्रचार-प्रसार द्रुतगति से चल रहा था।

दशलक्षण पर्व में सात मंडल बनाये गये व सात इन्द्रध्वज विधान एक साथ सम्पन्न हुए। आश्विन शु. पूर्णिमा को मेरा 60वाँ जन्मदिवस मनाया गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा –

माघ शु. 3 से 13 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक की तिथियाँ (13 फरवरी से 24 फरवरी 1994 तक) निश्चित हुईं।

इसी मध्य यहाँ अयोध्या के दिगम्बर अखाड़ा के प्रसिद्ध महंत परमहंस व नृत्यगोपालदास जी आदि अनेकों संत-महंत सभी मेरे पास आते रहते थे। सभी से चर्चाएं होती रहती थीं। सभी पूर्णरूपेण पक्षधर थे। प्रभु श्री ऋषभदेव, भरत चक्री, श्रीरामचंद्र आदि की चर्चाएँ भी होती रहती थीं।

माघ शु. 9 (20 फरवरी 1994) को श्री मुलायमसिंह (उत्तरप्रदेश मुख्यमंत्री) का आगमन हुआ। मेंने एकांत में उन्हें कुछ संकेत व संबोधन दे दिये थे।

भगवान ऋषभदेव की कृपा से शांतिपूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुलायम-सिंह से ब्र.रवीन्द्र कुमार ने अवध विश्वविद्यालय में-

(1) श्री ऋषभदेव शोधपीठ स्थापना

(2) सरयू नदी के उद्यान का नाम 'श्री ऋषभदेव उद्यान'

(3) ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय

(4) श्री ऋषभदेव पॉलीटेक्निक कॉलेज

आदि के लिए घोषणाएं करा दीं। जो सभी अयोध्या में सम्पन्न हो चुकी हैं।

कुल मिलाकर पंचकल्याणक महोत्सव, रथयात्रा का अतिशयपूर्ण विशाल जुलूस व महामस्तकाभिषेक निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है एवं अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ सर्वत्र देश-विदेशों तक प्रचार शुरू हो गया कि-

अयोध्या श्रीरामचंद्र से पहले उन्हीं के पूर्वज श्री 'ऋषभदेव' की 'जन्मभूमि' भी है। जैन व जैनेतर ग्रंथों के प्रमाण भी दिखाये जाते रहे हैं।

इसी प्रकार अवध विश्वविद्यालय व दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, अयोध्या दि. जैन कमेटी आदि के तत्त्वावधान में यहाँ अयोध्या में मेरे सान्निध्य में "भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव" आदि विषयों पर संगोष्ठी, सेमिनार आदि भी होते रहे हैं।

यहाँ से विहार कर लखनऊ आदि में अनेक विधान आदि कार्यक्रम कराके पुनः टिकैतनगर में ईसवी सन् 1994 का वर्षायोग विशेष प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ एवं श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन विद्यालय में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित करायी है। शरदपूर्णिमा को उत्तरप्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल जी वोरा का आगमन हुआ है।

अनंतर अयोध्या आकर सरयू नदी के निकट ऋषभदेव उद्यान में 21 फुट पद्मासन श्री आदिनाथ–ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण कराकर उनका अनावरण माघ शु. 9–20 फरवरी 1995 को सम्पन्न हुआ।

डॉ. राममनोहर लोहिया यूनिवर्सिटी में 'श्री ऋषभदेव जैन पीठ' उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायमसिंह यादव द्वारा घोषित था, कुलपति जी ने उसका शिलान्यास मेरे सान्निध्य में रखा, उसी दिन विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह आयोजित कर मुझे "डी. लिट्. की मानद उपाधि-माघ शुक्ला षष्ठी, 5 फरवरी 1995 को प्रदान की। पुनः अयोध्या तीर्थ पर अनेक प्रभावना के कार्य सम्पन्न कराकर वहाँ से हस्तिनापुर के लिए चैत्र कृ. द्वादशी, मंगलवार 28 मार्च 1995 को मंगल विहार करके ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी 28 मई 1995 को हस्तिनापुर आ गई।

हस्तिनापुर चातुर्मास में श्री ऋषभदेव भगवान से संबंधित-शिविर-संगोष्ठी आदि के कार्यक्रम आयोजित हुए हैं-पाठ्य पुस्तकों में जो लिखा है कि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक हैं, इसको हटाया जावे, श्री ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर हुए हैं, यह पाठ जोड़ा जावे, आदि चर्चाएँ व्यापक स्तर पर ली गईं।

मांगीतुंगी यात्रा–

अयोध्या में सन् 1994 में आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के द्वारा लिखित मांगीतुंगी तीर्थक्षेत्र से लगभग 25 पत्र आ गये कि-

माताजी! आप जैसे अयोध्या गई हैं, वैसे ही मांगीतुंगी आना ही आना है। यहाँ आकर पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर जी के अपूर्ण कार्य को पूर्ण कराना है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराना है। मैंने अयोध्या से मांगीतुंगी के लिए विहार किया किन्तु गर्मी के निमित्त से स्वास्थ्य गड़बड़ होने से ब्र. रवीन्द्र कुमार जी वापस हस्तिनापुर ले आये और बोले-चातुर्मास के बाद चलना है। अतः सन् 1995 का चौमासा पूर्ण कर 27 नवम्बर 1995 को मांगीतुंगी के लिए विहार कर 27 अप्रैल 1996 को मांगीतुंगी सकुशल पहुँच गई।

वहाँ मार्ग में इंदौर समाज के अति आग्रह से चातुर्मास की स्वीकृति देनी पड़ी थी, किन्तु यहाँ सभी के अति आग्रह से व शायद ऋषभदेव की अनुकम्पा से ही मानों इंदौर की 99 प्रतिशत में एक प्रतिशत छूट का लाभ उठाया व यहीं मांगीतुंगी चातुर्मास हो गया।

आश्विन शु. 14 की पिछली रात्रि में मेरे ध्यान में आया कि–

''यदि पूर्वमुखी पहाड़ मिले, पूर्वमुखी बड़ी प्रतिमा बने, श्री ऋषभदेव की प्रतिमा हो व 108 फुट उत्तुंग हो'' तो सारे विश्व के लिए अतिशयपूर्ण मंगलकारी होगी।''

मैंने प्रातः शरदपूर्णिमा के दिन पहले आर्यिका चंदनामती, क्षुल्लक मोतीसागर व ब्र. रवीन्द्र कुमार से कहा-पुनः सभी दिल्ली, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, हैदराबाद आदि के कार्यकर्ताओं के सामने घोषित कर दिया।

जय-जयकारों के साथ निर्णय लिया गया कि–

इसके लिए अलग मूर्ति निर्माण कमेटी बनेगी, तभी कार्य शुरू किया जायेगा। साथ ही सभी ने ब्र.रवीन्द्र कुमार को अध्यक्ष, विधायक जयचंद जी कासलीवाल-चांदवड़ को कार्याध्यक्ष व पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण को महामंत्री तथा दिल्ली के महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट्स (संघपति) को कोषाध्यक्ष घोषित कर दिया। कमेटी को रजिस्टर्ड कराना, पहाड़ खरीदना आदि कार्यक्रम शुरू हो गये।

मेरा वहाँ से विहार होकर दिल्ली आगमन होकर क्रमशः कमलमंदिर में भगवान ऋषभदेव का पंचकल्याणक, मानसरोवर कैलाशपर्वत (कृत्रिम निर्मित होकर) यात्रा, चौबीस कल्पद्रुम विधान, श्री ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, अंतर्राष्ट्रीय ऋषभदेव निर्वाण महामहोत्सव-1008 निर्वाणलाडू चढ़ाना। दो बार तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी जी का आगमन आदि प्रभावनापूर्ण कार्यक्रम ईसवी सन् 1997 से लेकर सन् 2000 तक व्यापक स्तर पर प्रचारित किये गये।

प्रयाग तीर्थ निर्माण व कुण्डलपुर तीर्थ विकास–

अयोध्या में 1993 के चौमासा में 'श्री ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या' पुस्तक लिखते समय प्रकरण आया पद्मपुराण में-

प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः, प्रयागस्तेन कीर्तितः।

जहाँ भगवान ऋषभदेव ने प्रकृष्ट त्याग करके वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की थी वही स्थान 'प्रयाग' इस नाम से प्रसिद्ध हो गया। पुनश्च वहाँ वटवृक्ष के नीचे एक शिलापट्ट लगा हुआ था कि यहाँ ऋषभदेव को दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ है। भगवान ने जिस वृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी, उसी वृक्ष के नीचे एक हजार वर्ष बाद भगवान को केवलज्ञान हुआ है। अर्थात् श्री ऋषभदेव के तप व ज्ञान कल्याणक प्रयाग में हुए हैं।

इसी अध्ययन के बाद मैंने प्रयाग को "दीक्षा तीर्थ व केवलज्ञान तीर्थ" बनाने का निर्णय लिया था। तभी से प्रयास चल रहा था।

विश्वशांति शिखर सम्मेलन–

संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में धर्माचार्य के रूप में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ने दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व किया। यह सम्मेलन युनाइटेड नेशन्स द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 से 31 अगस्त 2000 तक आयोजित था। सम्पूर्ण भारत से निमंत्रित 100 से भी अधिक सम्प्रदाय के धर्माचार्यों ने इसमें भाग लिया। दिगम्बर जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्र.रवीन्द्र जैन ने मेरी आज्ञा से वहाँ जाकर विश्वभर में जैनधर्म के प्राचीन एवं अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार इस माध्यम से किया।

प्रयाग तीर्थ का नवनिर्माण एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव–

प्रीतविहार-दिल्ली में महती प्रभावना के साथ कैलाश मानसरोवर यात्रा महोत्सव में दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा उद्घाटन समारोह आदि कार्यक्रम सम्पन्न कराकर 1 नवम्बर 2000 को दिल्ली से विहार कर इलाहाबाद में नवनिर्मित प्रयाग तीर्थ पर 1 जनवरी 2001 को मंगल पदार्पण। 51 फुट ऊँचे नवनिर्मित कैलाशपर्वत पर 14 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रभु ऋषभदेव प्रतिमा विराजमान कर माघ शु. 5 से 15 (8 फरवरी 2001) तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं 1008 कलशों से भगवान ऋषभदेव का महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हुआ। यहाँ पर कृत्रिम वटवृक्ष निर्माण कर 5 फुट खड्गासन की प्रभु ऋषभदेव प्रतिमा का दीक्षाकल्याणक व ऋषभदेव समवसरण का भव्य पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व विश्वहिन्दूपरिषद

के कार्याध्यक्ष श्री अशोक सिंघल आदि के आग्रह से मेरे द्वारा महाकुंभ नगर में भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। विशाल पांडाल में भगवान ऋषभदेव प्रतिमा विराजमान कर 1008 निर्वाणलाडू माघ कृ. 14 को प्रभु के निर्वाण दिवस पर चढ़ाये गये। विशेष घटयात्रा, शोभायात्रा, ऋषभदेव चित्र प्रदर्शनी आदि के निमित्त से महाकुंभ नगर में भी अतिशायी जैनधर्म की गूंज रही। पुनः विश्वहिन्दूपरिषद के नवम संसद के विशेष पांडाल में मेरा प्रवचन हुआ। भगवान ऋषभदेव युग के आदिसृष्टा की प्रयाग दीक्षा व केवलज्ञान भूमि है। अक्षयवटवृक्ष के नीचे दीक्षा व दिव्यज्ञान आदि पर मैंने जैन व वैदिक ग्रंथो से भी प्रकाश डाला, तभी वहाँ पांडाल में व वहाँ उपस्थित हजारों संत-महंतों ने भी श्री ऋषभदेव को श्रीराम का पूर्वज जाना, माना तथा उस समय पांडाल ऋषभदेवमय बन गया। मार्ग में मैंने भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव के निमित्त से 2600 अर्घ्य समन्वित विश्वशांति महावीर विधान लिखा था। उसको यहीं प्रयाग में महावीर जयंती के अवसर पर सम्पन्न कराया तथा इस वर्ष को 'अहिंसा वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की।

कौशाम्बी अन्तर्गत प्रभासगिरि पर महोत्सव–

इसी समय यहाँ से कौशाम्बी अन्तर्गत प्रभासगिरि पर जहाँ पर छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान की सवा सात फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान कराकर तिथि-वैशाख शु. 10 से पूर्णिमा, 2 मई से 7 मई 2001 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करायी तथा 2565 वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी को मुनि अवस्था में चंदनासती ने आहार दिया था। वह इतिहास साकार करने हेतु प्रभु की आहारदान मुद्रा की प्रतिमा, सती चंदनबाला आहार देते हुए भी विराजमान करायी व आहार विधि सम्पन्न करायी।

दिल्ली में आगमन–

पुनः 22 अप्रैल 2001 को प्रयाग दीक्षातीर्थ से विहार कर राजधानी दिल्ली आकर 2001 का वर्षायोग अशोक विहार, फेस-1, दिल्ली में स्थापित हुआ, चूँकि चातुर्मास में पूरी दिल्ली में भ्रमण हो सकता है अतः यहाँ ''फिरोजशाह कोटला मैदान'' दिल्ली में विशाल पांडाल में 26 मंडल बनाये गये। ब्र. रवीन्द्र कुमार की अध्यक्षता में 2600वें भगवान महावीर जयंती वर्ष

के उपलक्ष्य में यह महाआयोजन कराया गया।

इसमें मंडल पर रत्न चढ़ाना, रत्नों से जाप्य करना आदि अनेक कार्यक्रम नये रूप में प्रस्तुत कराये गये।

कनॉट प्लेस में पावापुरी रचना बनवाकर 2600 निर्वाणलाडू भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर चढ़ाये गये।

'तालकटोरा स्टेडियम' में दिगम्बर-श्वेताम्बर सभी साधुओं के सान्निध्य में विशाल जैन समाज का 'जप, तप महाकुंभ' नाम से एक महान आयोजन प्रभावनापूर्ण सम्पन्न हुआ।

'फिक्की ऑडीटोरियम' में 6 जनवरी को 'अ.भा. दिगम्बर जैन युवा-परिषद' का रजतजयंती कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये।

पुनश्च भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विकास हेतु 20 जनवरी 2002 को इण्डिया गेट दिल्ली से मेरा विहार अतिशायी प्रभावना के साथ प्रारंभ हुआ। मार्ग में 12 जून 2002 को प्रयाग तीर्थ पर पदार्पण, वहीं वर्षायोग, तीर्थ निर्माण की पूर्णता आदि सम्पन्न कराकर अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

यहाँ पर ''न्यायाधीश सम्मेलन'' 2 नवम्बर 2002 को सम्पन्न कराकर यहाँ से 4 नवम्बर को विहार कर वाराणसी, आरा, पटना आदि शहरों में विशेष धर्मप्रभावना कराते हुए 29 दिसम्बर 2002 को श्री महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में प्रवेश किया। यहाँ 7 फरवरी से 11 फरवरी, माघ शु. 5 से 11 तक प्रभु महावीर स्वामी की 11 फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा का पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। नंद्यावर्त महल का नवनिर्माण, भगवान ऋषभदेव व नवग्रह मंदिर में नवग्रह शांतिकारक भगवन्तों के पंचकल्याणक सम्पन्न हुए हैं।

यहाँ से सम्मेदशिखर तीर्थ की पुनः एक बार पदयात्रा हो गई है। वहाँ भी भगवान ऋषभदेव को विराजमान कराया। राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ का पंचकल्याणक व मानस्तंभ आदि निर्माण, गुणावां में श्री गौतमस्वामी प्रतिमा विराजमान आदि कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये। पुनः पावापुरी में प्रतिमा विराजमान एवं राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुलकलाम का आगमन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

ईसवी सन् 2003 व 2004 के चातुर्मास भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में सम्पन्न हुए।

कुण्डलपुर से 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का प्रवर्तन भी कराया गया।

यहाँ से 14 नवम्बर 2004 को विहार कर 23 दिसम्बर 2004 को वाराणसी में आगमन। वहाँ पौष कृ. एकादशी को भगवान पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक पर ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव'' का उद्घाटन कराया। यहाँ विशेष धर्मप्रभावना के साथ सिंहपुरी (सारनाथ) में भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि में विशाल प्रतिमा विराजमान कराकर पंचकल्याणक महोत्सव आदि कार्य सम्पन्न कराते हुए 4 फरवरी 2005 को टिकैतनगर जन्मभूमि प्रवेश हुआ।

अतिशय चमत्कार के साथ नवनिर्मित मंदिर में 24 तीर्थंकर भगवन्तों का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

अयोध्या तीर्थ वंदन–

अनंतर 11 वर्ष के पश्चात् तिथि फाल्गुन शु. 7 को-17 मार्च 2005 को प्रभु ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में मंगल प्रवेश हुआ। चैत्र कृ. 7 से 9, 1 अप्रैल से 3 अप्रैल तक भगवान ऋषभदेव का महाकुंभ महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ।

यहाँ अयोध्या में अनेक संतों-महंतों ने भी प्रभावना में भाग लिया तथा अपने-अपने आश्रमों में मेरे प्रवचन कराये व सम्मान किया।

इस महामस्तकाभिषेक का सीधा प्रसारण आस्था चैनल से कराया गया। इसी समय मैंने घोषणा की कि–

यहाँ अयोध्या तीर्थ में 'पांचों भगवन्तों के जन्मस्थल पर बने टोकों पर मंदिरों के निर्माण हों व जिनप्रतिमाएं विराजमान करायीं जावें। इससे पूर्व यहाँ टोकों पर प्राचीन चरण विराजमान थे, जिनका समय-समय पर जीर्णोद्धार होता रहा है। ये टोंक व उनमें चरण चतुर्थ काल से ही यहाँ रहे हैं। समय-समय पर इनका जीर्णोद्धार होता रहा है।

अयोध्या में (1) ईसवी सन् 1952 में कटरा मंदिर में भगवान ऋषभदेव, भरत, बाहुबली की प्रतिष्ठा व सन् 1965 में रायगंज मंदिर में 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की वैशाख शु. 13 को प्रतिष्ठा आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुई हैं।

(2) सन् 1994 में त्रिकाल चौबीसी के 72 भगवन्तों की माघ शु. द्वादशी को प्रतिष्ठा एवं सन् 1995 में श्री ऋषभदेव के समवसरण के जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा फाल्गुन कृ. एकम् से पंचमी तक मेरे ससंघ सान्निय में सम्पन्न हुई हैं।

(3) श्री ऋषभदेव की प्रथम टोंक पर सन् 2011 में भव्य मंदिर का निर्माण होकर पद्मासन श्री ऋषभदेव भगवान फाल्गुन कृ. 3 को प्रतिष्ठित होकर विराजमान हुए हैं।

ईसवी सन् 2013 में सरयू नदी के तट पर श्री अनंतनाथ की टोंक पर विशाल जिनमंदिर में 10 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा का पंचकल्याणक हुआ है।

ईसवी सन् 2014 में श्री अजितनाथ की टोंक पर भव्य मंदिर में पद्मासन श्री अजितनाथ का पंचकल्याणक हुआ।

सन् 2014 में ही मगसिर शु. 10, सन् 2014 में श्री अभिनंदननाथ की टोंक पर मंदिर बना व श्री अभिनंदननाथ की प्रतिमा विराजमान हुई है।

सन् 2013 में ही भरत-बाहुबली मंदिर बनकर उनकी टोंक पर भरत-बाहुबली की प्रतिमाएं विराजमान हुई हैं।

अभी सन् 2019 में भगवान सुमतिनाथ की टोंक पर जिनमंदिर बनकर धातु की सुंदर सवा तीन फुट पद्मासन प्रतिमा विराजमान हुई हैं। जिनकी प्रतिष्ठा अभी मेरे सान्निध्य में सम्पन्न हुई है।

इस अवसर पर भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक महोत्सव, जुलूस (अभूतपूर्व) रथयात्रा आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं।

अयोध्या शाश्वत तीर्थ की महिमा–

तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ में आने के छह महीने पहले से ही माता के आंगन में प्रतिदिन साढ़े तीन करोड़[1] रत्नों की वर्षा शुरू हो जाती है। सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर रत्नों की वर्षा करता है। भगवान का जन्म होते ही सौधर्मेन्द्र असंख्य देव-देवियों के साथ आकर पहले नगरी की तीन प्रदक्षिणा देते हैं पुनः पिता के घर में प्रवेश कर इंद्राणी को प्रसूतिगृह में भेजकर तीर्थंकर शिशु को प्राप्त कर वैभव के साथ सुमेरु पर्वत पर ले जाकर पांडुक शिला पर तीर्थंकर शिशु को बिठाकर 1008 कलशों से जन्माभिषेक करते हैं।

---

1. हरिवंशपुराण सर्ग 8, पृ. 164।

ऐसे रत्नों की वर्षा अयोध्या में पाँच बार पाँच तीर्थंकरों के समय पंद्रह-पंद्रह महीने तक हुई है। आज भी जो कुबेर टीला (मणि पर्वत) कहलाता है, ''जनश्रुति रही है कि यहाँ पर कुबेर देव रत्नवृष्टि करते रहे हैं'' इसलिए इसे कुबेर टीला कहते हैं। अयोध्या तीर्थ की प्रदक्षिणा पाँचों तीर्थंकरों के कल्याणक महोत्सवों में इंद्रों ने की है। भगवान ऋषभदेव के व उनके पुत्र भरत के शरीर की ऊँचाई पाँच सौ धनुष (500×4=2000 हाथ) थी। उनका सर्वतोभद्र महल 81 मंजिल का था। आप स्वयं चिंतन करें कि महल की ऊँचाई, लम्बाई, चौड़ाई कितनी रही होगी?

उसी अयोध्या में भरत चक्रवर्ती का वैभव, 96 हजार रानियाँ, सभी के पुत्र-पुत्रियाँ, पौत्र आदि के निवास, कितने रहे होंगे। 18 करोड़ घोड़े, 84 लाख हाथी आदि चक्रवर्ती का वैभव कितना बड़ा रहता है। आदि.....।

अतः उस समय अयोध्या कितनी विशाल थी, अर्थात् बहुत ही विशाल थी। श्रीरामचंद्र ये आठवें बलभद्र हुए हैं। आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व का इतिहास है। अयोध्या में श्रीराम ने हजारों जिनमंदिर[1] बनवाये थे व बहुत से विद्यालय-महाविद्यालय[2] बनवाये थे। उस समय अयोध्या की आबादी सत्तर करोड़[3] की थी। अर्थात् श्रीरामचंद्र के समय भी अयोध्या बहुत ही विशाल नगरी-राजधानी रही है, ऐसा पद्मपुराण-जैन रामायण में वर्णन है। आज से लगभग डेढ़ सौ, दो सौ वर्ष पूर्व अयोध्या में सौ जैनमंदिर थे, ऐसा इतिहासकारों ने लिखा है।

अन्य इतिहास ग्रंथों के अनुसार सन् 1330 में अयोध्या में अनेक जैन मंदिर थे। महाराजा नाभिराज का मंदिर, पार्श्वनाथ बाड़ी, गोमुखयक्ष, चक्रेश्वरी यक्षी की रत्नमयी प्रतिमा, सीताकुंड, सहस्रधारा, स्वर्गद्वार आदि अनेक जैनायतन विद्यमान थे।

असंख्यातों मोक्षगामी महापुरुषों की जन्मभूमि अयोध्या–

प्रभु ऋषभदेव ने बड़े पुत्र भरत को राज्यभार सौंप कर प्रयाग में जाकर दीक्षा ली थी, श्रीभरत चक्री के प्रथम पुत्र अर्ककीर्ति ने राज्यभार को अपने पुत्र को सौंपकर दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया, ऐसी परम्परा अविच्छिन्नरूप से चौदह लाख राजाओं तक चली है। आगे भी उसी इच्छवाकुवंश में राजागण मोक्ष प्राप्त करते रहे हैं।

---

1. पद्मपुराण भाग 1, पर्व-3, श्लोक 172 से। 2-3. पद्मपुराण भाग 3, पर्व 83, पृ. 124।

वहीं पर राजा सगर दूसरे चक्रवर्ती हुए हैं। इनके 60 हजार पुत्रों ने एवं स्वयं चक्रवर्ती ने भी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है। श्रीराम, भरत, शत्रुघ्न ने भी निर्वाण प्राप्त कर आत्मा को परमात्मा बनाया है। श्रीराम के पुत्र लव-कुश ने भी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है।

श्री तीर्थंकर ऋषभदेव विश्वशांति अहिंसा केन्द्र–

यहाँ श्री ऋषभदेव के महामस्तकाभिषेक के समय मैंने इसे ''विश्वशांति केन्द्र'' के नाम से घोषित किया है। यहाँ पर विश्वशांति मंत्र का उच्चारण चलता रहेगा– ''ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्री ऋषभदेवाय नमः''।

(1) यहाँ अयोध्या में भगवान ऋषभदेव के एक सौ एक पुत्र भरत चक्रवर्ती आदि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनका मंदिर बनेगा।

(2) भरत चक्रवर्ती की प्रतिमा 21 फुट खड्गासन प्रतिमा विराजमान रहेंगी, जिनके नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' है।

(3) भरत चक्रवर्ती के ''विवर्द्धन कुमार'' आदि नव सौ तेईस (923) पुत्रों ने भगवान के समवसरण में जैनेश्वरी दीक्षा लेकर उसी भव से मोक्ष प्राप्त किया है। इनकी प्रतिमाएं स्थापित होंगी। एक स्तूप में ये बनेंगी।

(4) तीस चौबीसी मंदिर बनेगा।

(5) तीन लोक रचना बनेगी।

(6) सर्वतोभद्र महल बनेगा।

श्री ऋषभदेव आदि तीर्थंकरों के जीवन दर्शन से संबंधित प्रदर्शनी-म्यूजियम आदि चलचित्र आदि द्वारा भगवन्तों के जीवन परिचय के साथ उनके सिद्धान्तों का भी प्रचार-प्रसार होता रहेगा। 'अहिंसा परमो धर्मः' की जयपताका फहराती रहेगी। व्यसनों से मुक्त शाकाहारी जीवन बनाने की प्रेरणा व प्रभुभक्ति की प्रेरणा मिलती रहेगी। यह मेरी भावना सफल होवे, इसी भावना के साथ–

ऐसे पवित्र पूज्य शाश्वत तीर्थ अयोध्या को कोटि-कोटि नमन करते हुए युग की आदि में जन्में भगवान श्री ऋषभदेव को एवं श्री अजितनाथ, श्री अभिनंदननाथ, श्री सुमतिनाथ एवं श्री अनंतनाथ तीर्थंकर भगवन्तों को अनंत-अनंत बार नमन करते हुए यहाँ पर जन्म लेकर सिद्ध परमात्मपद को प्राप्त असंख्यातों सिद्ध परमेष्ठी भगवन्तों को असंख्यातों बार नमस्कार करती हूँ।

श्री ऋषभदेव के पुत्र 'भरत' से 'भारत'

तीर्थंकर ऋषभदेव राज्यसभा में सिंहासन पर विराजमान थे, उनके चित्त में विद्या और कला के उपदेश की भावना जाग्रत हो रही थी। इसी बीच में ब्राह्मी और सुंदरी दोनों कन्याओं ने आकर पिता को नमस्कार किया। पिता ने आशीर्वाद देते हुये बड़े प्यार से दोनों कन्याओं को अपनी गोद में बिठा लिया पुनः शिक्षा देते हुये बोले-

"पुत्रियों ! तुम दोनों की यह अवस्था विद्या अध्ययन के योग्य है।"

पुनः भगवान ने अपने चित्त में "श्रुतदेवता को आदरपूर्वक सुवर्ण के विस्तृत पट्टे पर स्थापित करके 'सिद्धं नमः' मंत्र का पुत्रियों से उच्चारण कराया'। पुनः दाहिने ओर बैठी हुई ब्राह्मी पुत्री को "अ आ इ ई" आदि अक्षर लिखाये और बायीं ओर बैठी हुई सुंदरी पुत्री को 1,2,3,4, आदि अंक विद्या पढ़ाई। श्री ऋषभदेव के द्वारा पुत्री ब्राह्मी को सर्वप्रथम अकार आदि जो विद्या सिखाई गई थी इसीलिये इसका ब्राह्मी लिपि यह नाम सार्थक हुआ है।

उस समय स्वयंभू ऋषभदेव ने सौ अध्यायों में निबद्ध व्याकरण शास्त्र पढ़ाया था। उक्ता, अत्युक्ता आदि छब्बीस भेदों सहित छंद शास्त्र पढ़ाये थे और उपमा, रूपक आदि भेदों से युक्त अलंकार शास्त्र भी सिखाये थे।

'श्री गणधर देव ने व्याकरण, छंद और अलंकार इन तीन विद्याओं को 'वाङ्मय' संज्ञा दी है।

कुछ ही दिनों में प्रभु ने दोनों पुत्रियों को संपूर्ण विद्याओं में पारंगत कर दिया कि जिससे वे सरस्वती देवी के अवतार के लिये पात्र बन गई थीं।

जगद्गुरु ऋषभदेव ने अपने भरत आदि एक सौ एक पुत्रों को भी संपूर्ण विद्याओं को सिखाकर शास्त्र एवं शस्त्र आदि कलाओं में निष्णात बना दिया था। अर्थशास्त्र, नृत्यशास्त्र, चित्रकला, मकान आदि बनाने की विद्या, कामनीति, आयुर्वेद, धनुर्वेद, रत्नपरीक्षा, घोड़े, हाथी आदि की परीक्षा, तंत्र शास्त्र आदि सर्व विद्याओं में पारंगत कर दिया था।

इस प्रकार प्रभु ऋषभदेव ने युग के प्रारंभ में सर्वप्रथम यहीं अयोध्या नगरी में अपनी पुत्रियों को विद्या दान दिया था पुनः पुत्रों को पढ़ाया था, अतः यह स्थली विद्याओं के उद्भव का प्रथम स्थान है वैसे ही कन्याओं को विद्या

पढ़ाने का भी यह प्रथम स्थान है। प्रभु ने अपने पुत्रों को 'यज्ञोपवीत' देकर संस्कारों से संस्कारित किया था।

अंसावलंबिना ब्रह्मसूत्रेणासौ दधे श्रियम्।
हिमाद्रिरिव गांङ्गेन स्रोतसोत्संगसंगिनाम्।।198।।

(महापुराण पर्व 15)

तन्नाम्ना भारतं वर्षमिति हासीज्जनास्पदं।
हिमाद्रेरासमुद्राच्च क्षेत्रं चक्रभृतामिदं।।159।।

(महापुराण पर्व 15)

यही बात महापुराण में वर्णित है-''कंधे पर लटकते हुये 'यज्ञोपवीत' से वे भरत सुशोभित हो रहे थे।'' इन **भरत** के नाम से ही यह देश **'भारत'** इस नाम से प्रसिद्ध हो रहा है। ''इतिहास के जानने वालों का कहना है कि जहां अनेक आर्यपुरुष रहते हैं ऐसा यह हिमवान पर्वत से लेकर समुद्रपर्यंत का चक्रवर्तियों का क्षेत्र **'भरत'** पुत्र के नाम से **'भारत वर्ष'** इस नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

वैदिक ग्रंथों के प्रमाण–

नित्यानुभूतनिजलाभ-निवृत्त-तृष्णः।
श्रेयस्य तद्रचनया चिरसुप्तबुद्धेः
लोकस्य यः करुणयाभयमात्मलोक-
माख्यान् नमो भगवते ऋषभाय तस्मै।

(भाग. 5 स्कंध 6, अध्याय)

इन्हीं के पुत्र भरत के नाम से भारत वर्ष प्रसिद्ध हुआ-

''येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठ गुण आसीद येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति।'' (भाग. 5 स्कंध, अ. 4)

वायुपुराण में ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर ही यह देश 'भारत' कहलाया। ऐसा कहा है–

नाभिस्त्वजनयत् पुत्रं मेरुदेव्यां महाद्युतिः।
ऋषभं पार्थिवं श्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्र शताग्रजः।
सोऽभिषिच्याथ भरतः पुत्रं प्राव्राज्यमास्थितः।।

हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्।
तस्माद् भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।।

(वायु पुराण 31, 5052)

अभिप्राय यह है कि नाभिराज की पत्नी मेरुदेवी ने ऋषभ पुत्र को जन्म दिया। ऋषभ ने सौ पुत्रों में अग्रणी भरत को जन्म दिया और भरत का राज्याभिषेक कर स्वयं उन्हें हिमाचल से लेकर दक्षिण देश तक राज्य देकर स्वयं दीक्षा ले ली। इन्हीं भरत के नाम से यह देश 'भारत' कहलाया है।

इसी का समर्थन नृसिंह पुराण में है–

ऋषभाद् भरतो भरतेन चिरकालं धर्मेण पालितत्वादिदं भारतं वर्षमभूत्।

(नृसिंहपुराण 30-7)

इसी प्रकार वैदिक संप्रदाय के अनेक ग्रंथों में नाभिराजा के पुत्र ऋषभदेव और ऋषभदेव के पुत्र भरत थे, उन्हीं के नाम से 'भारत' ऐसा माना है।

देवदर्शन की महिमा

फलं ध्यानाश्चतुर्थस्य षष्ठस्योद्यानमात्रतः। अष्टमस्य तदारम्भे गमने दशमस्य तु।।178।।
द्वादशस्य ततः किंचिन्मध्ये पक्षोपवासजम्। फलं मासोपवासस्य लभते चैत्यदर्शनात्।।179।।
चैत्यङ्गणं समासाद्य याति षाण्मासिकं फलम्। फलं वर्षोपवासस्य प्रविश्य द्वारमश्नुते।।180।।
फलं प्रदक्षिणीकृत्य भुङ्क्ते वर्षशतस्य तु। दृष्ट्वा जिनास्यमाप्नोति फलं वर्षसहस्रजम्।।181।।
अनन्तफलमाप्नोति स्तुतिं कुर्वन् स्वभावतः। नहि भक्तेर्जिनेन्द्राणां विद्यते परमुत्तमम्।।182।।

जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा के दर्शन की भावना करते ही दो उपवास का फल मिल जाता है। चलने की अभिलाषा करते ही तीन उपवास का फल, चलने का आरंभ करते ही चार उपवास का फल, चलते-चलते पाँच उपवास का फल, कुछ दूर चले जाने पर बारह उपवास का फल, बीच मार्ग में पहुँच जाने पर पन्द्रह उपवास का फल, मंदिर के शिखर का दर्शन करते ही एक मास के उपवास का फल, मंदिर में प्रवेश करने पर छह मास के उपवास का फल, मंदिर के द्वार में प्रवेश करने पर एक वर्ष के उपवास का फल, तीन प्रदक्षिणा देने पर सौ वर्ष के उपवास का फल, जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के दर्शन करने से हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है। पुनः जिनप्रतिमा के सन्मुख खड़े होकर भावपूर्वक स्तुति करने से अनंत उपवास का फल प्राप्त होता है। यथार्थ में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से बढ़कर और कोई उत्तम पुण्य नहीं है।

–पद्मपुराण, पर्व 32, पृ. 99

प्रशस्ति

-दोहा-

ऋषभदेव को नित नमूँ, नमूँ अयोध्या तीर्थ।
हुए अनंतानंत ही, तीर्थंकर मुनिकीर्त्य।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वती मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमती नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, पैंतालिस जग ख्यात।
फाल्गुन सुदि द्वितिया तिथी, वंद्य हुई विख्यात।।5।।

तीर्थ अयोध्या शाश्वती, सुमतिनाथ को वंद्य।
पंचकल्याणक पूर्णकर, हुआ श्रेष्ठ आनंद।।6।।

सुमतिनाथ जिनबिम्ब का, पंचकल्याणक वंद्य।
अतिप्रभावनायुत यहाँ, रथयात्रा अभिनंद्य।।7।।

तिथि चतुर्थि फाल्गुन सुदी, महामस्तकाभिषेक।
ऋषभदेव भगवान का, अतिशायी अभिषेक।।8।।

'तीर्थ अयोध्या स्तुती-संग्रह' किया प्रपूर्ण।
स्वकृत कृती से संकलन, अतिशय महिमा पूर्ण।।9।।

पाँच तीर्थंकर देव की, जन्मभूमि जग मान्य।
सब पर जिनमंदिर बने, अतिशय महिमावान।।10।।

त्रयकालिक चौबीस जिन-प्रतिमाएं जगपूज्य।
समवसरण प्रभु ऋषभ का, नमूँ त्रिजग के सूर्य।।11।।

जब तक तीर्थ प्रसिद्ध यह, रहे सर्व सुखकार।
तीर्थस्तुतिसंग्रह कृती, भरे पुण्य भंडार।।12।।

पढ़ो पढ़ावो भव्यजन, करो भवोदधि अंत।
तीर्थंकर प्रभु वन्दना, देवे सौख्य अनंत।।13।।

मध्यलोक जिनालय स्तुति

–शंभु छंद –

जय मध्यलोक भव चैत्यालय, जय आदि अंत विरहित दाता।
जय स्वयं सिद्ध अनुपम अविचल, जय भव-भव के दुःख से त्राता।।
जय स्वयं सिद्ध शाश्वत जिनगृह, चिंतामणि चिंतित फलदाता।
जय कामधेनु सुर कल्पवृक्ष, पारसमणि वांछित फलदाता ।।1।।

जय पांच मेरू वक्षारगिरी, गजदन्त कुलाचल के मंदिर।
विजयारध, जम्बू शालमली, तरु के इष्वाकृति के मंदिर।।
मनुजोत्तर नग नंदीश्वर के कुण्डल रूचकाचल के सुन्दर।
ये जिनगृह चउशत अट्ठावन, उनमें जिनवर प्रतिमा मनहर।।2।।

स्वात्मानन्दैक परम अमृत, झरने से झरते समरस को।
जो पीते रहते हैं मुनिगण, वे भी उत्कण्ठित दर्शन को।।
वे ध्यान धुरंधर ध्यान मूर्ति, यतियों को ध्यान सिखाती हैं।
भव्यों को अतिशय पुण्यमयी, अनवधि पीयूष पिलाती हैं।।3।।

ढाई द्वीपों के मंदिर तक, मानव विद्याधर जाते हैं।
आकाश गमन ऋद्धीधारी, ऋषिगण भी दर्शन पाते हैं।।
आवो आवो हम भी पूजें ध्यावें वंदे गुणगान करें।
भव-भव के संचित कर्मपुंज, सब हान, 'ज्ञानमति' प्राप्त करें।।4।।

आचार्य श्रीदेशभूषण स्तुतिः

(बसंततिलका छंद)

कारुण्यपुण्यगुणरत्न-समुद्रसूरे!।
संसार-वारिनिधिपोत! जगत्प्रपूज्य!।।
भव्याब्जभास्कर! ममाद्यगुरो! सुभक्त्या।
भो देशभूषणमुनीन्द्र! नमाम्यहं त्वां।।1।।

(अनुष्टुप्)

जन्ममृत्युभयाद् भीतां तितीर्षुं भववारिधेः।
हस्तावलंबनं दत्वा गृहकूपात् समुद्धृतः।।2।।
आगमज्ञो गभीरःसन् उपसर्गपरीषहान्!
सहिष्णुः शान्तिमूर्तिस्त्वं सुजनप्रीणनक्षमः।।3।।
स्मितास्यः क्रोधजिन्मोह मायामत्सरदूरगः।
ध्यानाध्ययनयोः सक्तो विकथाशून्यमानसः।।4।।
अनाद्यनिधनायोध्यापुर्या उद्धारको भवान्।
विंशहस्तप्रमामूर्तेः पुरुदेवस्य कारकः।।5।।
सर्वत्रभारते पद्भ्यां विहरन्ननुकंपया।
सर्वेषां हितसंशास्ता त्वं निष्कारण बांधवः।।6।।
देशस्यभूषणः श्रीमान् देशभूषणयोगिराट्।
विश्वशांति प्रकुर्वाणो भवान् विजयतां चिरं।।7।।

(पृथ्वी छंद)

अनेक भवदुःखदं विषयसौख्यविषसन्निभं।
विवेच्य पुनरत्यजश्च जिनरूपरूपोऽभवः।।
सुमुक्तिललनेच्छया सततमात्मनं ध्यायसि।
नमोऽस्तु गुरुवर्य! ते परमसौख्यसंसिद्धये।।8।।

*****